ॐ

जुड़ने और जोड़ने के लिए

कान्यकुब्ज वाणी

2026

सन 1923 में प्रकाशित वन्दे मातरम् की सचित्र दुर्लभ चित्रावली

वन्दे मातरम् विशेषांक

होली फाग

छात्राओं को साइकिल व सिलाई मशीन

विमोचन वाणी

दीप प्रज्ज्वलन

नन्ही वेदिका को पुरस्कृत करते मुख्य अतिथि

महिलाओं को सिलाई मशीन

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्। सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।।1।।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्, फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्, सुखदाम् वरदाम् मातरम्।
वन्दे मातरम्।।2।।

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले, कोटि-कोटि
भुजैधृत खरकरवाले, के वॉले माँ तुमि अबले, बहुवलधारिणीं
नमामि तारिणीम्, रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम्।।3।।

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म, त्वम् हि प्राणाः शरीरे,
बाहुते तुमि माँ शक्ति, हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गड़ि
मन्दिरे-मन्दिरे। वन्दे मातरम्।।4।।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी, कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्, नमामि कमलाम्, अमलाम्
अतुलाम्, सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।।5।।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्, धरणीम् भरणीम् मातरम्।
वन्दे मातरम्।।6।।

विषय सूची

	आवरण कथा	3
1.	'वंदे-मातरम्' का क्रमिक विकास/ - प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित	7
2.	शतकोटि नमन/- डॉ. उपेन्द्र नाथ शुक्ल	13
3.	आँगन में बाजार आ गया/- इंदु प्रकाश द्विवेदी	13
4.	अवगुंठन सुंदरी/- तिलक शुक्ला	15
5.	यूँ ही/- शोभा बाजपेयी	22
6.	श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा 2026	27
7.	आतुर प्रकृति/- एम सी द्विवेदी	28
8.	ऑटिज्म/- कीर्ति बाजपेई चतुर्वेदी	29
9.	आध्यात्म/- डॉ. दिनेश चन्द्र अवस्थी	33
10.	मेरे संकोची राम/- विनीता मिश्रा	34
11.	लाइफ स्टाइल डिसऑर्डर्स और सर्केडियन रिद्म/ - डॉ. डी एस शुक्ला	41
12.	कुक्कुर गाथा/- तिलक शुक्ला	45
13.	जिनके सहयोग के हम आभारी हैं	49
14.	होली मिलन आयोजन में योगदान/विज्ञापनदाता कान्यकुब्ज वाणी	50
15.	नकद छात्रवृत्ति/साइकिल पाने वाली छात्रायें	51
16.	कान्यकुब्ज वाणी आभा मण्डल	52
17.	मूँछ और बम काण्ड (सत्य घटना)/- पी के दीक्षित	61
18.	मेरी मामी और चार्वाक दर्शन/- डॉ. डी एस शुक्ला	69
19.	रामत्व/- मुक्ता द्विवेदी	71
20.	अथातो पादुका जिज्ञासा/- डा श्रीकांत अग्निहोत्री	73
21.	नारी एक मर्यादा/- रोली	75
22.	फलित ज्योतिष- कुण्डली विधान/- सुरभि दीक्षित त्रिवेदी	76

आवरण कथा

भारत का पहला राष्ट्रघोष 'वन्दे मातरम्' सन् 1876 में श्री बंकिम चन्द्र चौटर्जी 'बंकिम बाबू' द्वारा रचा गया था।

1757 में प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों की व्यवसायिक ईस्ट इण्डिया कम्पनी पहली बार भारत में शासक के रूप में स्थापित हो गई। अंग्रेजों के कुप्रबंध और अत्याचार के कारण छः वर्ष बाद ही बंगाल में व्यापक विद्रोह प्रारंभ हो गए। इसमें हिन्दू सन्यासी और मुस्लिम फकीरों की मुख्य भूमिका थी, अतः इसे बंगाल का 'फकीर-सन्यासी' आन्दोलन के नाम से जाना जाता है। इस संग्राम में बंगाल और आज के पूर्वी बिहार के किसान शामिल थे। ये जन आन्दोलन 1767-1800 तक लगातार चला। बेहतर बंदूक और तोपखाने की सहायता से अंग्रेजों द्वारा यह आन्दोलन कुचल दिया गया। इस प्रकार बंगाल का 'फकीर-सन्यासी' आन्दोलन अंग्रेजों के विरुद्ध भारत का पहला विद्रोह था।

1770 के दशक में सन्यासी आन्दोलन के चलते पूरे बंगाल में देश प्रेम की उत्कट भावना व्याप्त हो गयी थी। ऐसी पृष्ठभूमि में कंपनी सरकार के सभी सरकारी कार्यक्रम में 'लॉन्ग लिव द क्वीन' का गायन अनिवार्य कर दिया गया। बंकिम बाबू उस समय कंपनी सरकार में डिप्टी कलेक्टर के पद पर तैनात थे। देशप्रेमी बंकिम बाबू को ब्रिटेन की महारानी का स्तुति गायन शूल की भांति चुभता था। अतः उन्होंने ब्रिटेन की महारानी के स्थान पर 'वन्दे मातरम्' शीर्षक से भारत माता की स्तुति के दो श्लोक रचे जो भारत के स्वातंत्र्य उद्घोष के रूप अमर हो गए।

बंकिम बाबू केवल दो श्लोक की रच कर रुके नहीं। उनके हृदय में बंगाल की जनता और किसानों का कष्ट मथता रहा। इस पीड़ा में उन्होंने तत्समय चल रहे फकीर-सन्यासी आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर 'आनंदमठ' नाम के उपन्यास की रचना की। इस उपन्यास में बंकिम बाबू ने संस्कृत में रचे प्रारंभिक श्लोक के साथ सात बंगाली भाषा के पद जोड़ कर देश प्रेम के गीत के रूप में प्रस्तुत किया 'आनंदमठ' का नायक भावानंद सन्यासी गाता है। आनंदमठ उपन्यास उस समय के आन्दोलन का सजीव अंकन था। आनंदमठ का 'वन्दे मातरम्' स्वतंत्रता का युद्ध घोष बन गया।

इस क्रांतिकारी उपन्यास और गीत के प्रभाव का आकलन इस तथ्य से भी किया जा सकता है कि दो वर्ष के अन्दर ही कांग्रेस पार्टी के द्वितीय स्थापना के कलकत्ता अधिवेशन में श्री हेमचंद जी ने इस गीत के कुछ अंशों का गायन किया। 1896 के अधिवेशन में इसे गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा गायन के बाद 1901 से यह गीत कांग्रेस के हर अधिवेशन के प्रारंभ में स्वराज घोष के रूप से गाया जाने लगा। अगस्त 1905 में 'बंग-भंग' के विरुद्ध जन आन्दोलन में कलकत्ता के टाउन हाल प्रांगण में 30 हजार की भीड़ ने समवेत स्वर में इसका गायन किया। वन्दे मातरम् बंग भंग का युद्धघोष बन गया। लोग प्रदर्शन और जुलूस के रूप में वन्दे मातरम् गाते हुये निकलने लगे। इसकी बढ़ती हुई लोकप्रियता को देख अंग्रेजों ने पब्लिक प्लेस पर इसका गायन पर प्रतिबन्ध कर दिया। वन्दे मातरम् गायन करती हुई भीड़ पर कई बार अंग्रेजों ने लाठी चार्ज किया। लोग लहूलुहान होने के बाद भी वन्दे मातरम् का घोष करते रहे। अंग्रेजों द्वारा बंग-भंग आदेश की वापसी स्वतंत्रता संग्राम की पहली विजय थी। इस विजय में राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' का बड़ा योगदान था।

इसकी लोकप्रियता से चिढ़कर क्रिश्चियंस ने इस गीत को नीचा दिखने के लिए वितंडा रचना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने कहा कि जन्म-भूमि या मदरलैंड का विचार पश्चिम से चुराया गया है। इसमें भारतीयता नहीं है किन्तु हमारे यहाँ अथर्ववेद कहता है- "माता भूमिःपुत्रोऽहं पृथिव्याम्" (भूमि हमारी माता है, हम पृथिवी के पुत्र हैं)। रामायण में "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" (जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान हैं) की उक्तियाँ भारत में दशाब्दियों से विद्यमान थीं।

वन्दे मातरम् गान के मूल दो पद संस्कृत में हैं; उपन्यास में जोड़े गए सात पद बांग्ला भाषा में हैं जिनमें भारत माता को दुर्गा देवी मानकर स्तुति की गयी है।

कई वर्षों तक तक कांग्रेस अधिवेशन में हिन्दू-मुस्लिम एक साथ इसका गायन करते थे। मोहम्मद अली जिन्ना स्वयं इसे गाते थे और जो लोग इसके सम्मान में खड़े नहीं होते थे, उन्हें डांटते भी थे। एकाएक निहित कारणों से बांग्ला भाषा में जोड़े गए सात पद जिनमें भारत माता को दुर्गा देवी के रूप में वर्णन किया है, पर मुसलमानों को आपत्ति होने लगी। मुसलमानों के लिए इसका गायन प्रतिबंधित कर दिया गया।

1923 में काकीनाडा के अधिवेशन में कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष मौलाना अहमद अली ने वन्दे मातरम् गान को इस्लाम विरुद्ध करार कर दिया। सदैव की

भांति जब कार्यक्रम में वन्दे मातरम् का गायन प्रारंभ हुआ। अधिवेशन अध्यक्ष मौलाना अली ने गायन को बीच में ही रोकने का प्रयास किया किन्तु गायक ने बिना रुके गायन पूरा करने के उपरांत ही मंच से उतरे।

1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ड में मैडम भीखा जी कामा ने जो पहला तिरंगा फहराया था, उसके मध्य में 'वन्दे मातरम्' घोष अंकित था।

संविधान सभा का प्रारंभ भी वन्दे मातरम् गायन से प्रारंभ हुआ। मुसलमानों को अपना अलग देश मिल जाने के बावजूद भारत में वन्दे मातरम् को 'राष्ट्रगान' का सम्मान देने में मुट्ठी भर तुष्टिकरण वाले कर्णधारों की आपत्ति के कारण रविन्द्र नाथ टैगोर रचित 'जन गण मन' को राष्ट्रगान का सम्मान मिला। वन्दे मातरम् की ऐतिहासिकता और जन-जन में व्याप्ति को देखते हुये वन्दे मातरम् के संस्कृत में लिखे दो पदों को 'राष्ट्र गीत' का स्थान मिला किन्तु साथ ही डॉ. इकबाल द्वारा लिखे 'सारे जहां से अच्छा' को 'कौमी तराना' के रूप में स्वीकार हुआ।

वर्षों तक संसद का प्रारम्भ वन्दे मातरम् के गान और समापन 'राष्ट्र गान' से होता रहा किन्तु अब वन्दे मातरम् गायन का चलन स्वतः समाप्त हो गया।

राष्ट्र गीत की इस उपेक्षा का किसी ने संज्ञान भी नहीं लिया; यदि लिया भी होगा तो 'अब तो दादुर बोलिहैं' के तर्ज पर लोगों ने कोकिला की भांति मौन रहना श्रेयस्कर समझा।

पृष्ठ सारांश-

- 7 नवम्वर 1876, बंगाल के कांतल पाडा गांव में बंकिम चन्द्र चटर्जी ने 'वंदे मातरम्' की रचना की।
- 1882, वंदे मातरम बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय के प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंद मठ' में सम्मिलित।
- इसकी धुन यदुनाथ भट्टाचार्य ने बनायी थी। इस गीत को गाने में 65 सेकेंड (1 मिनट और 5 सेकेंड) का समय लगता है।
- भारत का राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् पहली बार कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में 1896 में गाया गया।
- मूल रूप से 'वंदे मातरम्' के प्रारंभिक दो पद संस्कृत में थे, जबकि शेष गीत बांग्ला भाषा में।

- वंदे मातरम् का अंग्रेजी अनुवाद सबसे पहले अरविंद घोष ने किया।
- दिसम्बर 1905 में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में गीत को राष्ट्रगीत का दर्जा प्रदान किया गया, बंग भंग आंदोलन में 'वंदे मातरम्' राष्ट्रीय नारा बना।
- 1906 में 'वंदे मातरम' देव नागरी लिपि में प्रस्तुत किया गया, कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर ने इसका संशोधित रूप प्रस्तुत किया।
- 1923 के कांग्रेस अधिवेशन में वंदे मातरम् के विरोध में स्वर उठे।
- पं. नेहरू, मौलाना अब्दुल कलाम अजाद, सुभाष चंद्र बोस और आचार्य नरेन्द्र देव की समिति ने 28 अक्टूबर 1937 को कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में पेश अपनी रिपोर्ट में इस राष्ट्रगीत के गायन को अनिवार्य बाध्यता से मुक्त रखते हुए कहा था कि इस गीत के शुरुआती दो पैरे ही प्रासंगिक हैं। इस समिति का मार्गदर्शन रवीन्द्र नाथ टैगोर ने किया।
- 14 अगस्त 1947 की रात्रि में संविधान सभा की पहली बैठक का प्रारंभ 'वंदे मातरम्' के साथ और समापन 'जन गण मन' के साथ।
- 1950 'वंदे मातरम्' राष्ट्रीय गीत और 'जन गण मन' राष्ट्रीय गान बना।
- 2002 बी.बी.सी. के एक सर्वेक्षण के अनुसार 'वंदे मातरम्' विश्व का दूसरा सर्वाधिक लोकप्रिय गीत।
- 2026 में जब वन्दे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर इस विजय घोष की स्मृति और सम्मान दिलाने के लिए 2026 को 'वन्दे मातरम की सार्ध शताब्दी (150) वर्ष के रूप में मनाये जाने की घोषणा की गई।

अस्तु राष्ट्रगीत की सार्ध शताब्दी पर प्रस्तुत है-

कान्यकुब्ज वाणी 26 का
वन्दे मातरम् विशेषांक

•

'वंदे-मातरम्' का क्रमिक विकास

- प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

लोकोत्तर स्तर पर है भारत जननी। आगमों में यही भूमा अर्थात् जो अल्प न हो, सर्वव्याप्त हो। अंश नहीं, अंशी। प्राचीन काल में भारत भूमि को प्रायः सभी ने एक विराट देवी की मान्यता प्रदान की है। प्रसिद्ध सूक्ति है-

समुद्रवसने देवि पर्वत स्तन मण्डले।
विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व वे।।

प्रातः उठने और धरती पर पैर रखने के पूर्व यह प्रार्थना यहाँ आज भी प्रचलित है। हमारी मान्यता है कि सर्वत्र भूमा का प्रताप व्याप्त है। तिरुपति बालाजी में श्रीदेवी, भूदेवी, लीलादेवी के त्रिपति सहस्राधिपति विद्यमान हैं। इनकी पूजा बाली तक होती है। वैष्णवों की यह दृढ़ आस्था रही है कि 'वयं प्रजापतेह प्रजावभूम' (यजुर्वेद 18/29) अर्थात् हम प्रजापति की प्रजा हैं। 'अथर्ववेद' के बारहवें अध्याय में जो मातृभूमि का विवरण दिया गया है और पृथ्वी सूक्त के 162 मंत्रों में जो भूगोल दिया गया है, उससे भारत माता का पूरा श्रीविग्रह क्रमशः उजागर हुआ है। इसे विश्वामित्र नदी संवाद तथा नदी सूक्त भी कहा जाता है। भारत भूमि की परिधि का उल्लेख करते हुए यही कहा गया है। जनजीवन में आज भी दीपोत्सव मनाते हुए यह आह्वान किया जाता है- 'धरती माता जागो।' ऐसी जननी जन्मभूमि यहाँ स्वर्गादपि गरीयसी मानी गयी है।

कालक्रम में मानचित्र के आधार पर भारत माता की रूप-रचना हुई। बृहत्तर भारत का मानचित्र हमें किरीटधारिणी देवी के रूप में दिखाई देता है। काशी के भारत माता मंदिर (1936) और हरिद्वार की भारतमाता के मंदिर (1983) में वही रूप अंकित किया गया है। दौलताबाद, उज्जैन एवं चित्रकूट में भारतमाता के मंदिर बने हैं। इसकी पहल महर्षि अरविंद ने की थी। कालान्तर में भारत के मानचित्र को 1905 में चतुर्भुजी भारतमाता की मूर्ति के रूप में चित्रित किया अवनींद्रनाथ ने। बंगाल में 1873 में किरणचन्द वंद्योपाध्याय ने 'भारतमाता' नामक नाटक का मंचन करके इस परिकल्पना से साहित्य को जोड़ा। इस प्रकार राष्ट्रवाद में देवत्व का समावेश हो गया।

स्वामी रामतीर्थ ने 1873 में कहा- "भारतभूमि मेरा शरीर है। कन्याकुमारी चरण, हिमालय शिर, केशों में गंगा, ब्रह्मपुत्र-सिंधु, विंध्याचल, कटि मेखला, कोरोमण्डल मालावार दाएँ-बाएँ पैर और पूर्व-पश्चिम भुजाएँ हैं। मैं सम्पूर्ण

भारत हूँ।" (द्रष्टव्य-'भारतमाता' व्याख्यान संकलन)

इसी छवि का उल्लेख देवी दुर्गा के रूप में बंकिमचन्द्र चटर्जी ने 1975 में 'वन्देमातरम्' गीत में किया। वे उन दिनों 'बंग-दर्शन' के सम्पादक थे। अपने पत्र में फीडर के रूप में उन्होंने प्रथम बार एक जगह छाप दिया था- 'वन्दे मातरम्'। उस समय बंगाल की आबादी थी लगभग सात करोड़। इसीलिए इस गीत में उन्होंने लिखा-

सप्तकोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले।
द्विसप्तकोटि भुजाय ह्रदखर करवाले।।

बंग माता की यह सुजला, सुफला, शस्यश्यामला, शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनी जैसी आकृति उनकी आँखों देखी मनोमयी छवि थी। कालक्रम में यह गीत इतना पसंद किया गया कि यह आनन्दमठ (1882) में सम्मिलित कर लिया गया। बंग विच्छेद आंदोलन के समय यह गीत रवीन्द्रनाथ तक के द्वारा गाया गया। इससे प्रेरित होकर गांधी जी ने 'भारत माता की जय' और 'वन्देमातरम्' को नारे के रूप में आत्मसात कर लिया। बंगाल में महर्षि अरविन्द के नेतृत्व में वन्देमातरम् आंदोलन वर्षों तक चला। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन् 1950 में इसे राष्ट्रीय गीत की सांविधानिक मान्यता प्राप्त हुई। इस गीत में भारतमाता को दुर्गा के रूप में चित्रित किया गया है- तुम हि दुर्गा दश प्रहरण धारिणी'। इससे प्रेरित होकर विभिन्न कवियों ने उस विराट मूर्ति का ध्यान किया, जिसके भीतर सारी सृष्टि समाहित है। आज भी हमारे समाज में प्रातःकाल अपनी हथेली को देखते हुए इस श्लोक का पाठ किया जाता है- "करागे वसते लक्ष्मी, कर मध्य सरस्वती। करमूले च गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्।"

'दुर्गा सप्तशती' में इसी मानस प्रतिमा का विधान किया गया है। कवीन्द्र रवीन्द्र ने उसी का ध्यान करते हुए लिखा-

आमि भुवन मनोमोहिनी।
आमि निर्मल सूर्य करोज्ज्वल धरणी जनक जननी
नील सिंधु जल धौत चरण तल।
अनिल विकम्पित श्यामल अंचल।
अम्बर चुम्बित भाल हिमाचल शुभ्र तुषार किरीटिनी।

हिन्दी कवियों पर इस मातृभूमि मूर्ति का गहरा प्रभाव पड़ा। भारतेन्दुजी और उनके युग के कई कवियों ने भाव-विभोर होकर इस भारतमाता की वंदना की। महर्षि अरविन्द ने अपनी कृति 'माँ' में उन्हें 'भूमा' कहते हुए ब्रह्माण्ड सम्राज्ञी, कल्प

रचयित्री, युगसृष्टि, सावित्री, माहेश्वरी, महाकाली आदि रूपों में प्रस्तुत किया। भृंगानंद ने उन्हें आद्याशक्ति, विश्व मातृत्व और सीता, राधा, विष्णुप्रिया का समन्वित रूप माना। रामकृष्ण परमहंस ने शारदा रूप में उनकी पूजा की। माँ आनन्दमयी ने उन्हें ब्रह्मवादिनी गौरी कन्या माना। सत्यानंद जी ने 'मातृ' रूप में उनकी इस प्रकार वंदना की-

भद्रकाली जगद्धात्री भक्त कल्याण कारिणीम्।
श्रीदुर्गारूपिणीमम्बार्चनां प्रणमाम्यहम्।।

हमारे ब्राह्मण ग्रंथों में माँ की महिमा का बखान करते हुए कहा गया है- 'सहस्त्रं तु पितृ न माता' अर्थात् पिता से हजार गुनी महिमा है माता की। इन माताओं में प्रमुख हैं अम्बा, जो रक्षा करती हैं। ऋग्वेद में कहा गया है- 'अम्बितमे नदीतमे सरस्वती'। दूसरी माँ हैं गायत्री माता, जिन्हें अथर्ववेद में वेदमाता कहा गया है। तीसरी हैं पृथ्वी माता। यही भू माता हैं। भू का अर्थ है- 'भवन्ति भूतानि यस्याम्'। वही हमें अन्नत जल देती है। इसीलिए पृथ्वी सूक्त में उसकी विशेष वन्दना की गयी है- 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे'।

हिन्दी साहित्य में 'भारत जननी' को पात्र रूप में प्रस्तुत करने का प्रथम श्रेय भारतेन्दु जी को है। इस काव्य नाटक के अतिरिक्त उन्होंने 'भारत दुर्दशा' नामक नाटक में भी भारत का मानवीकरण किया और उसे ट्रेजडी के रूप में प्रस्तुत किया। भारतेन्दु से प्रभावित श्रीधर पाठक ने भारत की एक पौरुषपूर्ण छवि अंकित की-

जय जय प्यारा भारत देश।
जय जय शुभ्र हिमाचल शृंगा
कलरव निरत कलोलिनि गंगा।
भानु प्रताप चमत्कृत अंगा,
तेज पुंज तप वेश।

उसी क्रम में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भू माता को साक्षात् श्रीविष्णु के रूप में इस प्रकार चित्रित किया-

नीलांबर परिधान हरित पट पर सुन्दर हैं।
सूर्य चन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर हैं।
नदियाँ प्रेम प्रवाह फूल तारे मण्डल हैं।
बंदीजन खग वृंद, शेष फन सिंहासन हैं।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस देश की।
हे मातृभूमि, तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।।

रामनरेश त्रिपाठी ने भारत भू का भूगोल बनाते हुए लिखा-

जिसके तीनों ओर महोदधि रत्नाकर है।
उत्तर में हिमशीश रूप सर्वोच्च शिखर है।

यह चित्र प्रसाद जी को भी बहुत प्रिय रहा है। भारत का यशोगान करते हुए उन्होंने 'स्कंदगुप्त' में एक विदेशी पात्र से कहलाया कि "विश्व का सबसे ऊँचा शिखर उसके सिरहाने और सबसे गहरा सागर इसके पैताने हैं।" इसी प्रकार शत्रु कन्य कार्नेलिया द्वारा गाया गया गीत- "अरुण यह मधुमय देश हमारा।" (चन्द्रगुप्त) प्रसाद जी की राष्ट्रभक्ति का पुष्ट प्रमाण है।

निराला जी का प्रसिद्ध गीत 'भारति जय विजय करे' में राष्ट्र के पूरे इतिहास भूगोल एवं संस्कृति बोध का उल्लेख हुआ है। वे कहते हैं कि हिमाच्छादित शिखर है भारत माता के ललाट पर बँधा मुकुट। तरु तृण वन लताओं का आच्छादन उनका रंग-बिरंगा बेल-बूटेदार परिधान है। गंगा की प्रवहमान धारा उनके कण्ठ पर विराजित मुक्तामाल है। सागर उनके चरण पखार रहा है। लंका उनके चरणों में अर्पित कमल के समान है। कोटि-कोटि कंठों से उच्चरित ध्वनियाँ यहाँ प्रणव ओंकार सदृश गूँज रही हैं-

लंका पदतल शतदल, गर्जितोर्मि सागर जल,
धोता शुचि चरण युगल, स्तव कर बहु अर्थ भरे।
तरु तृण वन लता वसन, अंचल में खचित सुमन।
गंगा ज्योतिर्जल कण, धवल धार हार गले।
मुकुट शुभ्र हिम तुषार शतमुख शतरव मुखरे।।

इसके पूर्व निराला जी ने एक अन्य कविता में भारत माता का मानवीकरण करते हुए ऐसी ही एक विराट रूपक रचना की थी-

जन्मभूमि मेरी हे जगन्महारानी।
मुकुट शुभ्र हिम तुषार, हृदय बीच विमल हार।
पंच सिंधु ब्रह्मपुत्र रवि तनया गंगा।
विंध्य विपिन राजे घनघेरि युगल जंघा।
बधिर विश्व चकित भीत सुन भैरव वाणी। (असंकलित कविताएँ)

ये राष्ट्रपरक गीत 1955 के आसपास रचे गए थे। शायद इनकी रचना के पीछे 'जन गण मन' की प्रत्यक्ष-परोक्ष कुछ प्रतिक्रिया रही हो। कई लोगो ने यह तर्क रखा था कि अधिनायक के स्वागत गान के रूप में रचित गीत को राष्ट्रगीत न माना जाए।

इसकी क्षतिपूर्ति हेतु हिन्दी कवियों ने कई प्रयास किये। भारत माता के कई चित्र पंत जी ने निर्मित किए। महाभारतीया की वंदना करते हुए वे कहते हैं कि "हिमालय उनकी शांति ध्वजा है। इन्द्रधनुष उनकी वेणी में सजी हुई चूड़ामणि है। शरत्चन्द्र उनके माथे पर चमकती हुई बिन्दी है। वायु तरंगों से हिलती हुई फसल भारत माँ का आँचल है।" एक अन्य गीत में ग्रामवासिनी भारत माँ का चित्र खींचते हुए यद्यपि कवि पंत ने उनके दुःख दैन्यग्रस्त रूप को अधिक प्रश्रय दिया है, फिर भी एक अलग तरह की भारत माता है वह। जैसे- "धूल-धूसरित खेत हैं उनका मैला आँचल, गंगा यमुना हैं आँसू, कुहासा हैं झुके नयन, छाया शशि है नेत्र और महाशून्य हैं उनकी पलकें।" इसी संदर्भ में माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा अंकित भारत माता का यह रूप भी द्रष्टव्य है- "हो मुकुट हिमालय पहनाता, सागर जिसके पद धुलवाता।"

चतुर्वेदी जी ने उस शस्य-श्यामला विन्ध्य धरती का 'इंलार्जमेंट' भारत माता के रूप में किया है, जैसे बंगमाता का भारत माता रूप में विस्तारण बंकिम ने किया था। चतुर्वेदी जी की "भारत माता ने बेल-बूटेदार नीचे रंग की साड़ी पहन रखी है। चंदा उनकी बिंदी की तरह है। चाँदनी कंचुकी है। उषा उनके गालों की लाली है। पक्षियों का कलरव उनकी कंठ ध्वनि है। सागर उनका पाद प्रक्षालन कर रहा है। किरणें नजर उतार रही हैं। मलयानिल के साथ सूर्य की किरणें उन्हें अर्घ्य दे रही हैं।" (बीजुरी काजर आँज रही)

मातृभू का एक दृश्य भगवतीचरण वर्मा रचित 'शत शत बार प्रणाम' गीत में इस प्रकार उभरा है-

हिमगिरि सा उन्नत तव मस्तक, तेरे चरण चूमता सागर
श्वासों में हैं वेद ऋचायें, वाणी में है गीता का स्वर।

इसी प्रकार माधव शुक्ल, राजाराम शास्त्री, श्यामलाल गुप्त 'पार्षद', वंशीधर शुक्ल आदि कई कवियों ने भारत माँ की वंदना की। देवराज दिनेश जी ने 'भारत माता की लोरी' गाई। कई फिल्मी गीतों में 'आई लव माई इंडिया' कहकर आस्था व्यक्त की गयी। दिनकर जी ने 'हिमालय के प्रति' तथा 'परशुराम की प्रतीक्षा' में भारतीय बल-विक्रम के प्रतीक रूप में कैलाशवासी प्रलयंकर शंकर का आह्वान किया। नए कवियों में धर्मवीर भारती ने 'द्रोपदी' रूप में भारत माता की जो छवि निर्मित की है, उसे भी एक विशिष्ट प्रयोग कहा जा सकता है। वे कहते हैं कि "भारत माता की तीस कोटि भुजाएँ हैं। वे 18 भाषायें बोलती हैं, किन्तु प्राण एक ही हैं।"

वस्तुतः ये सारे उद्‌गार अथर्ववेद, रामायण, ब्रह्मपुराण, दुर्गा सप्तशती, विष्णु पुराण आदि में प्रस्तुत स्तुतियों के परिविस्तार हैं। ऋषियों ने भारत को 'भा' अर्थात् प्रकाश में रत या केन्द्रित घोषित किया था। वेदों में पहले सम्पूर्ण पृथ्वी को माता माना गया था। उसी से प्रेरित होकर भारत ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का नारा दिया था। फिर महर्षि अरविन्द एवं स्वामी विवेकानन्द ने राष्ट्र को देवी मानकर पूजा। इसकी पहल शक्ति-पूजक बंगाल में हुई। स्वातंत्र्य समर के बीच यह नारा पूरे राष्ट्र में फैल गया। सर्वत्र भारत को मातृ मंदिर माना गया। प्रसिद्ध ब्रजभाषा कवि सत्यनारायण 'कविरत्न' ने उसी भाव से लिखा- **बंदौ भारत भू महतारी।** प्रताप नारायण मिश्र ने तो आजादी के लिए संघर्षरत कांग्रेस पार्टी तक को 'दुर्गा' कहकर सम्बोधि किया था- **देवि दुर्गा रूप जगती विपत्ति निवारिणी।**

श्रीधर पाठक ने एक राष्ट्रगीत में सर्वप्रथम 'जयहिन्द' का महोच्चार किया था। इसे नेताजी ने आजाद हिंद फौज के राष्ट्रीय अभिवादन (सलामी नारा) के रूप में अपना लिया, जो आज भी प्रचलन में है। चाहे भारत माता की छवि हो या राष्ट्र पुरुष की, सभी कवियों ने इस भूगोल को जीता-जागता दिखाया है और आर्यावर्त ब्रह्मावर्त का मानवीकरण किया है। अटल जी की एक कविता में भी यही भाव व्यक्त हुआ है। उन्होंने कश्मीर से हिन्द महासागर और पंजाब से बंगाल को जोड़कर भारत का एक विराट चाक्षुष बिंब सजाया है-

भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता-जागता राष्ट्रपुरुष है। हिमालय मस्तक है, कश्मीर किरीट है। पंजाब और बंगाल दो विशाल स्कंध हैं। पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघाएँ हैं। कन्याकुमारी इसके चरण हैं। सागर इसके पग पखारता है।

भारत देवता का यह विग्रह सभी भारतीयों का उपास्य है। भारत, भू देवी, सभी भारतीयों की आराध्य देवी है। कभी वे लगती हैं शत्रुसंहारिणी, महादुर्गा, महाकाली, कभी धन-धान्य सम्पन्न भारत लक्ष्मी, कभी कला विद्या बुद्धि प्रदायिनी महासरस्वती, कभी महाविष्णु, कभी महाशिव। समग्रतः इन सबका समवाय हैं साक्षात् भारत माता। हजारों वर्षों में उनका यह वर्तमान स्वरूप निर्मित हुआ है।

आज जब भारत माता को 'डाइन' कहा जा रहा हो, वन्दे मातरम् को गाने, राष्ट्रध्वज को फहराने, एक आचार संहिता को अपनाने के बजाय टुकड़े-टुकड़े गैंग बनाने का नारा दिया जाता रहा हो, आतंक, हिजाब, मदरसा-शिक्षा और अवैध कब्जों को लेकर एक समुदाय अराष्ट्रीय आचरण पर आमादा हो, तब भारतमाता के इस दिव्य रूप की वन्दना करते रहना अत्यावश्यक है।

•

शतकोटि नमन

- डॉ. उपेन्द्र नाथ शुक्ल

हे मातृभूमि शतकोटि नमन
हे मातृभूमि.....

हिम तुंग धवल पावन किरीट
जननी के उन्नत शिखर भाल।
अगणित स्फटिकों में विकीर्ण
होता ऊषा का अरुण बाल।

सुरसरि की पावन अमर धार
स्फुरित कर रही नवजीवन।
हे मातृभूमि.....

सुरभित श्यामल हरिताभ वसन
आलोकित वपु मुख मंद हसन।
आह्लादित हो अम्बुधि अगाध
करता निसि दिन केहरि गर्जन।

पद पंकज नित्य पखार सिन्धु
करता जननी का अभिनन्दन।
हे मातृभूमि....

•

आँगन में बाजार आ गया

- इंदु प्रकाश द्विवेदी

आँगन में बाजार आ गया।
रिश्तों में व्यापार आ गया।

फर्ज निभाने थे जब उनको,
याद उन्हें अधिकार, आ गया।

तू भी तो इक बार इधर आ,
मैं तो कितनी बार आ गया।

झूठ वो बोला इतने यकीं से,
मुझको भी एतबार आ गया।

बहुत चाह थी सब सच कह दूँ,
मन में सोच-विचार आ गया।

मैं भी गौतम हो सकता था,
जहन में बस परिवार आ गया।

उनकी बज्म के जो रंग देखे,
लगा यहां बेकार आ गया।

•

शंकर गेस्ट हाउस

ए.सी. एवं नान ए.सी. कमरे उपलब्ध हैं

प्लाट नं0 5, सरस्वती पुरम, निकट पी.जी. आई.
रायबरेली रोड, लखनऊ

सुशील दीक्षित
योगेश कुमार
पंकज

अवगुंठन सुंदरी

– **तिलक शुक्ला,** रायबरेली

नगर के सबसे वैभवशाली मदिरालय में नगर के सबसे बड़े श्रेष्ठि लड़खड़ाते हुए प्रवेश करते हैं। सारे सेवक और मधुबालायें एकाएक खड़े होकर उनकी ओर देखने लगते हैं। मदिरालय स्वामी भी उनके स्वागत को बढ़ा। तभी एक सुगंध से सुरभित व्यक्ति आकर उन्हें सहारा देते हुआ बोला- "यह क्या नगर श्रेष्ठि? सूर्य ढलते ही आप मदिरा में डूब गये**!**"

"ऐसी कोई मदिरा नहीं जो नगरश्रेष्ठि को डुबा सके।" श्रेष्ठि ने तमकते हुए कहा।

"नारी-सौन्दर्य भी नहीं?" व्यक्ति के स्वर में चुनौती का पुट था। चुनौती भांप नगर-श्रेष्ठि ने पहली बार आँख उठा कर अपरिचित को देखा। सजीला युवक, आँखों में काजल की रेखा उसकी आँखों की कुटिलता को उजागर कर रही थी। श्रेष्ठि समझ गए कि यह रूप-हाट का व्यापारी है।

श्रेष्ठि ने लगभग गुर्राते हुये कहा "रूप-हाट का सारा मधु मैं चख चुका हूँ। जाओ किसी और को ढूंढो।"

युवक ने एक चुनौती और फेंकी " 'अवगुंठन-सुंदरी' के दर्शन बिना आपका कथन दर्पोक्ति से अधिक नहीं है, श्रेष्ठि"**!**

"अवगुंठन...? रूप-हाट में 'अवगुंठन'? क्या कह रहे हो युवक**!**"

"हाँ श्रेष्ठि, मगध से आयी है। अवगुंठन में ही गायन और नर्तन करती है। अभूतपूर्व यष्टि और कोकिल-कंठ है, वह सुंदरी। उसकी प्रतिज्ञा है कि केवल वास्तविक नर के सम्मुख ही अवगुंठन हटाएगी। और...

पहली बार झटके में श्रेष्ठि की पीठ सीधी हुई। आग्नेय आँखों से उस पुरुष को देखते हुये वे बोले "इतना गर्व है उसे अपने ऊपर। अब तक उसे कोई वास्तविक नर नहीं मिला"**!**

"हाँ, श्रेष्ठि, 'आपके नगर' में उसकी यही गर्वोक्ति फैल रही है।" युवक ने 'आपके नगर' पर जोर देते हुये बोला।

"हूँ**!** मुझे उसके पास ले चलो।" सुरा की मदहोशी में भी श्रेष्ठि ने तन कर खड़े होने का प्रयास करते हुये कहा।

रूप-हाट में अवगुंठन सुंदरी के डेरे पर पहुँच कर श्रेष्ठि को लगा जैसे वह इंद्र के अखाड़े में पहुँच गया हो। विभिन्न रंगों के दीपदान में प्रज्वलित दीप इन्द्रधनुषी छटा बिखेर रहे थे। रसिकों के बैठने के लिए अर्ध-वृत्ताकार स्थान। सुन्दर आसन, प्रत्येक आसन के निकट छोटी सी मधुशाला। कस्तूरी, अगरु व अन्य मादक सुंगंध सुवासित सुरभि सभा की शृंगारिकता बढ़ा रही थी। निकट ही अर्ध-वृत्त के शीर्ष पर नायिका के आगमन हेतु मार्ग के दोनों ओर बैठे वादक वीणा, बांसुरी व अन्य यंत्रों से मद्धिम ध्वनि बिखेर रहे थे।

श्रेष्ठि के बैठते ही सभी वाद्ययंत्र एक साथ झम्म से बज उठे। श्रेष्ठि ने चौंक कर ऊपर देखा- एक कमनीय काया रसिक मंच के बीचोबीच खड़ी नागिन सी बल खा रही थी।

श्रेष्ठि अपना सर झटक कर अस्फुट स्वर में बोले "क्या इसकी काया अस्थि विहीन है? विधना ने इसे केवल मधु और मादकता से ही गढ़ा है?"

"संभव तो नहीं किन्तु, प्रतीत ऐसा ही होता है, श्रेष्ठि"।

श्रेष्ठि को लगा जैसे कोई मक्खी कान में भिनभिना कर उनका ध्यान बंटा रही है। उन्होने कुछ 'पण' देकर दलाल को जाने को इंगित किया। दलाल अपना अभीष्ट से अधिक पारश्रमिक पाकर अगले शिकार की खोज में जाने को व्याकुल था। श्रेष्ठि को बारम्बार प्रणाम करता वह निकल गया।

नृत्य की गति के साथ वाद्यों की लय भी तीव्र होती जा रही थी। कुछ देर में लगा जैसे वाद्य नृत्य-ताल से पिछड़ने लगे। फिर नृत्य की गति निरन्तर उत्कर्ष के बाद चरम पर पहुँच कर एकाएक थम गयी। विद्युत गति से नर्तन करती अवगुंठन सुंदरी क्लांत होकर श्रेष्ठि की गोद में अचेत गिर पड़ी।

एक नशा दूसरे नशे को काट देता है। श्रेष्ठि का मदिरा का नशा नृत्यांगना की मादकता से पूरी तरह छंट गया। एकाएक सुंदरी के मादक तन को अपने अंक में पाकर वह विस्मय और हर्ष से पुलकित हो उठे। सुंदरी की श्रम से हांफती गरम साँसें श्रेष्ठि के मुख पर हवन कुंड की हवि की भाँति पड़ रही थीं।

इसके पहले कि श्रेष्ठि कुछ समझें सेविकायें आकर सुंदरी को उठाते हुये बोलीं- "क्षमा करें श्रेष्ठि, संभवतः देवी अति श्रम से अचेत हो गई। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।" कहते हुये सेविकायें कोमलता से सुंदरी को सहारा दे कर ले गईं।

सुंदरी जा चुकी थी पर उसके साँसों की ऊष्मा श्रेष्ठि के हृदय तल तक उतर चुकी थी। श्रेष्ठि अकस्मात् क्षणिक संयोग और उतने ही त्वरित वियोग से उद्वेलित

हो उठे। उन्होंने जाती हुई अंतिम दासी का हाथ पकड़ कर सुंदरी के दर्शन की कामना प्रकट की। दासी "यह स्थान याचकों के लिए नहीं है, यहाँ केवल पारखी श्रीमानों का ही स्वागत है।" कहते हुये जाने लगी।

श्रेष्ठि तत्काल शत स्वर्णमुद्राओं की थैली देते हुये बोले "मैं केवल दूर से ही दर्शन करना चाहता हूँ।"

दासी पोटली अपनी कमर में खोंसते हुये बोली "यह केवल सन्देश वाहिका की दक्षिणा है श्रेष्ठि। देवी-दर्शन के लिए तुम्हें तिजोरी खोलनी होगी। इस समय समुचित धन न होने पर तुम हुंडी लिख सकते हो। इसके बाद ही मैं तुम्हारा आशय देवी तक पहुंचाऊंगी। उसके बाद देवी की इच्छा, वह अस्वीकार भी कर सकती हैं।"

श्रेष्ठि ने तत्काल एक लक्ष स्वर्णमुद्राओं की हुंडी लिख दी। कुछ समय बाद दासी ने बताया "देवी ने तुम्हें दूर से दर्शन देना स्वीकार किया है किन्तु राजन् तुम केवल दर्शन ही कर सकते हो, वार्तालाप नहीं।" कह कर दासी बल खाती हुयी चल दी। नगर श्रेष्ठि ऋतुमतीश्वाकी गंध से आतुर श्वान की भांति दासी के पीछे चल पडे। मार्ग में श्रेष्ठि को ध्यान आया कि श्रेष्ठि के स्थान पर 'राजन्' का संबोधन इंगित करता था कि, लाख स्वर्ण मुद्राओं की हुंडी का पर्याप्त असर हुआ। प्रचुर स्वर्ण मुद्राएँ ही सुंदरी के अनुग्रह की कुंजी है।

पर्यंक पर लेटी सुंदरी का पृष्ठ भाग ही श्रेष्ठि को दिख रही थी। सुंदरी की दूधिया पीठ पर रंग-बिरंगे दीपदान से छन-छन निकलते प्रकाश अठखेलियाँ किसी भी संत का मन डिगा सकती थीं। रजोगुण से तप्त श्रेष्ठि के तन-मन में कामना का ज्वार हिलोरें लेने लगा। पास ही खड़ी दासी श्रेष्ठि के तन-मन के भावों को ध्यान से परख रही थी। उसकी स्वामिनी ने आज उसे यही दायित्व सौंपा था।

पांच पल समाप्त होते ही दासी ने सुंदरी के कक्ष का पर्दा गिरा कर श्रेष्ठि को उसकी मुद्राओं द्वारा क्रीत समय समाप्त होने की सूचना दी। श्रेष्ठि ने वहां से हटने का कोई प्रयास नहीं किया। वे अलौकिक यष्टि से अभिभूत होकर कीलित हो चुके थे।

"श्रेष्ठि, कृपया अब देवी को विश्राम करने दें।" कहते हुये दासी ने सामने आ कर श्रेष्ठि के सामने लगभग धृष्टता से खड़ी हो गई। दृष्टिपथ बाधित होने से श्रेष्ठि तन्द्रा से बाहर आये। वे शिर झुका कर जैसे अपने तन को बलात् घसीटते कक्ष से निकल गये।

धीरे-धीरे श्रेष्ठि और सुंदरी की निकटता के अनुपात में हुंडियों पर लिखी स्वर्ण मुद्राओं की संख्या के शून्य भी बढ़ते गये। निकटता से मादकता और मादकता से कामना भी उसी अनुपात में बढती गई। मदिरा का मादक प्रभाव कामी और अहंकारी पर सर्वाधिक होता है। मदिरा से एक ओर जहाँ विवेक, आत्म-बल का क्षरण होता है वहीं कामना तथा अहंकार की अपरिमित वृद्धि होती है। नशे में दिन-रात डूबे श्रेष्ठि का मन अवगुंठन सुन्दरी को प्राप्त करने की लालसा में डूबा रहता था। अपने व्यापार से वह पूरी तरह विमुख हो चुका था। उसका विस्तृत व्यापार उसके ईमानदार मुनीम के कारण फिर भी चल रहा था। मुनीम ने कई बार श्रेष्ठि को समझाने का प्रयास किया परन्तु पंचशर से आहत श्रेष्ठि के लिये अवगुंठन सुन्दरी का संसर्ग ही जीवन का ध्येय हो गया था। वह दिन-प्रतिदिन हुंडी पर हुंडी जारी करता जा रहा था। सप्ताह में एक-दो बार श्रेष्ठि की लिखी हुन्डियों को लेकर बार रूप-हाट का कर्मचारी मुनीम के पास पहुंचता और अभीष्ट स्वर्ण मुद्राएँ ले जाता था।

सहस्त्र कोटि मुद्राएँ होम करने के बाद अब अवगुंठन सुन्दरी एकांत में केवल श्रेष्ठि के लिये नृत्य या गायन करती थी किन्तु श्रेष्ठि को कला से अधिक कामिनी की काया अभीष्ट थी। फिर हुंडियों के बढ़ते मूल्य के प्रसाद स्वरूप सुन्दरी अवगुंठन में रहते हुये गायन और नर्तन के साथ श्रेष्ठि को अपने हाथों से हाला प्रस्तुत करने लगी। हाला की मादकता, सुन्दरी की निकटता में डूबते श्रेष्ठि हुंडी पर हुंडी काटते गये और फिर एक मदभरी रात में श्रेष्ठि को अभीष्ट प्राप्त हो गया।

नींद खुलने पर श्रेष्ठि ने देखा पर्यंक पर वे अकेले थे। अवगुंठन सुन्दरी गायब थी। वह विजयी मुस्कान के साथ उठते हुये हलके से बोले- "बड़ा गर्व था अपनी काया पर**!**" किन्तु फिर एकाएक यह सोच कर उनकी वैजयंती मुस्कान मद्धिम पड गयी; रात्रि में जो कुछ हुआ, उसकी तो उन्हें स्मृति ही नहीं थी**!** वे सुरा में इतने मदहोश थे। उन्हें अफसोस हुआ कि इतना सब होने के बाद भी वे सुन्दरी के अवगुंठन के अन्दर नहीं झाँक सके। खैर अवगुंठन सुन्दरी का वे मानमर्दन कर सके, इसी तथ्य से अपने अहं को पोषित करते वे उठ कर चल दिए।

अपनी उपलब्धि और विफलता के बीच ऊभ-चूभ होते श्रेष्ठि अपने आवास पहुंचे। उन्हें आज पहली बार अपना आवास वीरान दिखा। न सेवकों की भागदौड़ और न ही मुख्य द्वार पर प्रहरी। प्रवेश द्वार का बन्दनवार भी कई दिनों से बदला नहीं गया था। श्रेष्ठि के मन में कर्मचारियों की लापरवाही पर क्रोध छाने लगा।

श्रेष्ठि ने चीखते हुये अपने मुनीम को पुकारा। उनके पिता के समय के वृद्ध मुनीम अपनी अवस्था के बाद भी शीघ्रता से उपस्थित हुये।

श्रेष्ठि : "इतनी दुर्व्यवस्था कैसे है मुनीम जी? न कोई प्रहरी, न कोई सेवक आखिर क्या हो गया है आपको? क्या मुझे दूसरे मुनीम की व्यवस्था करनी पड़ेगी?"

पिता समान मुनीम ने इतने कठोर शब्द जीवन में पहली बार सुने थे फिर भी वे संयत स्वर में बोले- "अभी तक मैं आपके स्नेह और आपके अनुरोध पर ही काम कर रहा था। आगे का निर्णय आप स्वयं लें।"

श्रेष्ठि कुछ नम्र होते हुये बोले "नहीं मुनीम जी मेरा प्रश्न आवास में फैली दुर्व्यवस्था पर था। कहीं यही हाल हमारे व्यापार का तो नहीं हो गया?"

मुनीम जी ने आंखें नीची करते हुये उत्तर दिया- "हाँ राजन्, व्यापार और कोष का हाल इससे भी बुरा है।" फिर कुछ रुक कर मुनीम जी ने फिर पूछा- "राजन्, क्या यह दुर्व्यवस्था आज आपको पहली बार परिलक्षित हुई?"

"क्यों क्या हुआ? मैंने संभवतः कभी ध्यान नहीं दिया। इन दिनों मैं काफी व्यस्त रहा।" श्रेष्ठि ने मुनीम जी से आँखें चुराते हुये कहा।

श्रेष्ठि के स्वर और आँखों में अपराध भाव देख कर मुनीम जी उन्हें वास्तविकता से परिचित कराने के उद्देश्य से बोले- "हाँ राजन्, इन दिनों सूर्य ढलते ही आप हुंडी पर हुंडी काटने में व्यस्त हो जाते थे। आप व्यस्त नहीं इतने अस्त-व्यस्त रहते थे कि अपने कोश और अचल संपत्ति का भी संज्ञान आपको नहीं रहा।" मुनीम के स्वर में दुःख भरा उपालंभ था।

श्रेष्ठि को याद आया कि वे मृग-मरीचिका का पीछा करने में यह भूल गए थे कि वे कब कितनी और कितने मूल्य की हुंडियां काटते रहे। सुरा और सुन्दरी कितनी मादक होती है, श्रेष्ठि को अब समझ आया। हम सब अपनी गलतियों की जिम्मेदारी हमेशा दूसरों पर थोपने का प्रयास करते हैं, इसी प्रयास में श्रेष्ठि ने मुनीम जी पर दोषारोपण करते हुये कहा- "मुझे रोकना आपका दायित्व था मुनीम जी। आप मुनीम होने के साथ मेरे शुभचिंतक भी हैं, आप मेरे अभिभावक भी हैं, आपने रोका क्यों नहीं?"

मुनीम जी को मालूम था कि यह स्थिति तो आनी ही थी, उन्होंने उत्तर दिया- "प्रयत्न तो कई बार किया राजन्, किन्तु आपने सदैव सीमा में रहने का आदेश दिया। जब आपने अपना पैतृक उपवन गिरवी रखा तब उस हुंडी को मैंने मना कर दिया। पर सेवक ने बताया कि आपने कहा है कि मुनीम जी या तो हुंडी

का समादर करें अथवा आज ही और अभी से अपने को सेवामुक्त समझें। मैंने आपके हित को देखते हुये पहला विकल्प सुना। मुझे विश्वास था कि तन्द्रा टूटने पर आपको मेरी आवश्यकता होगी।"

श्रेष्ठि की तन्द्रा अब पूरी तरह टूट चुकी थी। वे निढाल हो कर आसन पर गिर पड़े। उनके सामने अवगुंठन सुन्दरी की नृत्यशाला, स्वयं अपना अहंकार, सुरा और रूप-पिपासा में डूबा हुआ समय आँखों के सामने एक-एक कर गुजरने लगा। कुछ घड़ी पहले सुन्दरी के प्रणय से गर्वित श्रेष्ठि के मन में विचार कौंधा- 'जब उन्हें प्रणय के समय अवगुंठन से अनावृत चेहरा ही याद नहीं, तो क्या तय है कि उनका समागम अवगुंठन सुंदरी से ही हुआ? यह भी संभव है कि उनके पाश में बंधी काया उसकी किसी सहकर्मी अथवा दासी की भी हो।

श्रेष्ठि के हृदय पर मानो वज्र प्रहार हुआ। अभी कुछ क्षण पहले अपनी मर्दानगी पर गर्व करने वाले मद्यप को समझ में आया कि वास्तविक मर्द यूँ किसी स्त्री के सम्मुख लाचार या नतमस्तक नहीं होते। मर्द इतने तो बाहोश रहते ही होंगे कि अपने अंक में लेटी सुन्दरी का चेहरा तो देख सकें। श्रेष्ठि "हूँ" के साथ कुछ समय के लिये अचेत हो गये।

चेतना लौटने पर उन्होंने देखा कि वृद्ध मुनीम जी स्वयं जल पात्र लिये खड़े हैं। "ओह इसका मतलब अब घर में मुनीम जी को छोड़ कोई परिचारक शेष नहीं रहा।"

जल पीने के बाद श्रेष्ठि ने मुनीम जी से पूछा "अब क्या करना है, मुनीम जी?"

मुनीम जी ने सहानुभूति के स्वर में कहा- "राजन्, कल रात्रि की हुंडी के भुगतान का समय हो गया। आपके आवास की कुर्की आने वाली ही है। अब आपको मेरे आवास पर रह कर भविष्य पर निर्णय लेना होगा।"

श्रेष्ठि बिना प्रतिवाद के मुनीम जी के पीछे-पीछे चल पड़े।

x x x

आज तक पति के तिरस्कार को माधवी इस आशा में सहन करती रही कि शायद किसी दिन पति संतति की कामना से उसे स्वीकार करेंगे। परन्तु आज के नगर श्रेष्ठि होने के अहंकार से तप्त पति के शब्द असह्य हो गए। पति के कक्ष छोड़ते ही वह रात में ही माधवी ने पति गृह त्याग दिया।

पति द्वारा परित्यक्ता होना उतना कष्टकारी नहीं था जितना निःसंतान रहना। स्त्री की रचना ईश्वर ने सृजन हेतु ही की थी। वंध्या होने स्त्री की स्वयं

की आँखों में सबसे बड़ा कलंक था फिर जीवित रहने के लिये कोई आलम्ब तो होना चाहिये। केवल परमार्थ पर ही जीवनयापन उसे निःसार प्रतीत होने लगा। उसके सम्मुख पुनर्विवाह अथवा नियोग का मार्ग खुला था किन्तु अग्नि के सम्मुख किसी का वरण करने के बाद किसी अन्य पुरुष की कल्पना भी उसे असहनीय थी। फिर एक दिन वह अपने वेदोक्त स्वाति बूँद प्राप्ति हेतु निकल पडी।

कितना पीड़ादायक था रूप-हाट में बैठना। कितने कंटकाकीर्ण थे सौन्दर्य लोलुप मद्यपों के सम्मुख देहयष्टि का प्रदर्शन करते वे क्षण परन्तु उसकी लगन एक दिन सुफल हुई। उसका स्वयं का पति उसकी यष्टि सौन्दर्य से खिंचा उसके कोठे पर आ गया। उसे पूर्ण विश्वास था कि, मादक सौन्दर्य सुरभि भंवरे को अवश्य खीच लायेगी।

समय की प्रबलता देखिये- जिस पुरुष ने उसकी देहयष्टि का उपहास किया था, निरादर किया था; आज वही उसकी अवगुंठन आवृत यष्टि पर अपना सर्वस्व दांव पर लगा कर प्रणययाचक था।

स्वाती की बूँद जैसे ही सीपी में पड़ती है, वह सीपी बंद होकर सागर की तली में समाधिस्थ होकर मुक्ता-शुक्ता हो जाती है। माधवी भी सब कुछ समेट, नगर छोड़ कर अपने आश्रम आ गयी।

पांच वर्षों बाद मुनीम के साथ भिखारी की भांति द्वार पर खड़े अपने पति को देख कर आज करुणा के अलावा कोई भाव उसके मन में नहीं था। वह प्राकृतिक न्याय के बारे में सोच रही थी। कभी उसका तिरस्कार करने वाला गर्वोन्मत्त पुरुष आज भिखारी की भांति उसके सामने था। वह चाहती तो उसे दुत्कार भी सकती थी, किन्तु उस महामना साध्वी ने उस याचक को करुणा कर अपने आश्रम में आश्रय और भोजन हेतु आमंत्रित किया।

उसके बाद वह मुनीम जी के चरण छूकर बोली- "मुनीम जी, मैं आपकी आजीवन ऋणी रहूंगी। आपकी सहायता के बिना मैं अकेले कुछ भी नहीं कर सकती थी। आज आपने एक और उपकार कर मेरे पुत्र को उसके पिता से मिला दिया। फिर कुछ कठोर स्वर में कहा- "हाँ, मेरे पुत्र के इस जैविक पिता को यह स्पष्ट कर दीजिये कि वह यहाँ केवल शरणार्थी है। अपने पुत्र की माँ का पति बनाने का प्रयास कदाचित न करे।" यह कह कर साध्वी मुँह फेर कर आश्रम की ओर चल पडी।

●

यूँ ही

– **शोभा बाजपेयी,** पूर्व विभागाध्यक्ष अंग्रेजी
केकेवी कालेज, लखनऊ विश्वविद्यालय

श्री के सामने जब भी कोई ऊहापोह की स्थिति होती है और उसे शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल लगने लगता है तब उसके दिमाग में अपनी माँ की कही हुई कोई न कोई अवधी की कहावत कौंध जाती है। आज भी कुछ ऐसी ही स्थिति आन पड़ी थी, वह अपनी बिटिया शर्ली को कुछ समझाने की कोशिश कर रही थी और वह समझने के लिए तैयार ही नहीं थी। अचानक उसे अपनी माँ की कही अवधी की कहावत याद आ गई और उसके मुंह से बरबस निकल गया, "या जांघ खोलो तो आपन वा खोलो तो आपन।"

शर्ली : ममा**!** आप ऐसी इंट्रीगिंग कहावतें क्यों बोलती रहती हैं, साफ-साफ बोलिए ना कि आप मेरा पक्ष नहीं लेंगी।

श्री : देख शर्ली बात किसी का पक्ष लेने की नहीं है, मेरे लिए ऐसे में किसी का भी पक्ष लेना संभव नहीं था।

शर्ली : क्यों संभव नहीं था? मैंने क्या गलत कहा?

श्री : मैं यह कब कह रही हूं बिटिया रानी कि तुमने गलत कहा। बस, इतना बताना चाह रही हूं कि तुम्हारा लहजा गलत था, वह बहुत तल्ख था।

शर्ली : वाह भाई वाह**!** सही बात कह दो तो वह तल्ख लगेगी। मैंने यही तो कहा कि आपको पेट्स/पपीज के साथ स्कूपर लेकर चलना चाहिए। मिसेज पाठक की आदतें बुरी तो आपको भी लगती हैं, पर आप कुछ बोलती ही नहीं हैं। सामने से वह बस दीदी कहकर नमस्ते जो कर देती हैं और आप मुस्कुरा कर रह जाती हैं, आपकी जुबान खुलती ही नहीं और फिर पीठ पीछे आप भुनभुनाती रहती हैं।

श्री : उफ गॉड**!** मेरी स्थिति तो वही है एक तरफ कुआं तो दूसरी तरफ खाईं, मैं किसका पक्ष लूं?

शर्ली : क्या मतलब आपका?

श्री : मतलब कि "आई एम बिटवीन द डेविल एंड डीप ब्लू सी।"

शर्ली : ओह! तो आप मुझे उससे कम्पेयर करेंगी? मैं डेविल हूं...?

श्री : ना बाबा ना, तेरा उसका कोई कंपैरिजन नहीं है, अच्छा अब शांत हो जा। कल मैं स्वीपर को बुलवाकर साफ करवा दूंगी।

शर्ली : ओहो हो! अच्छी बात है, वह तो आप रोज करवाती ही हैं।

श्री : तो क्या करूं? तेरी तरह शील सौजन्य तोड़ दूं, झगड़ा करूं, सड़क कोई मेरी पर्सनल प्रापर्टी तो है नहीं, वो तो सबकी है ना।

शर्ली : सबकी है, का क्या मतलब ममा? वह आंटी मेरे ही गेट के सामने रोज अपने पपी को पूप करवाएंगी और हम लोग चुपचाप देखते रहेंगे और मुस्कुराते रहेंगे।

श्री : अब जानवर का क्या शर्ली उसे क्या पता कि यह किसका घर है, तुमने देखा नहीं वह उसे खींचकर ले तो जा रही थी मगर वह यहीं रुक गया।

शर्ली : वह रुक गया क्योंकि उसकी आदत हो गई है, पेट्स की टॉयलेट ट्रेनिंग भी कराई जाती है ममा और साथ में पॉटी स्कूपर लेकर भी चला जा सकता है।

श्री ने शर्ली से उलझना उचित नहीं समझा और बात को टालने की मंशा से वह वॉक करने लगी। टहलते हुए उसे याद आ रहा था वह लोग इस कॉलोनी में करीब दस साल पहले आए थे तो सबसे पहले पाठक जी के घर ही गए थे। उनके यहां अखण्ड रामायण का पाठ हो रहा था और उन्होंने न्योता भेजा था। समापन पर शहर के सारे गणमान्य लोग आए थे। श्री को बहुत अच्छा लगा था कि चलो कोई तो है अपनी तरफ का और मिलते जुलते संस्कृति और संस्कारों वाला। तभी शर्ली भी चहलकदमी करते हुए उसके पास आ गई और बोली-

शर्ली : ममा आपको तो बस आपके गांव वाला कोई मिल जाए तो बस आप आंख मूंद कर उस पर अपना प्यार और विश्वास लुटाने लगती हैं फिर आप उसकी हर ज्यादती को नजरअंदाज कर देती हैं।

इतना कहकर शर्ली ने शटलकॉक उठाई और भुनभुनाते हुए घर के अंदर चली गई।

श्री के परिवार को इस पाश कॉलोनी में शिफ्ट हुए अब कई साल हो चुके थे परंतु अभी तक इस कॉलोनी में किसी से आत्मीयता नहीं जोड़ सकी थी। यहां का रिवाज ही एकदम अलग था, सब रिजर्व और अपने-अपने में ही रहते थे पुराने

मोहल्लों जैसा कल्चर नहीं था। बस होली दीवाली अथवा नए साल में सोसायटी के फंक्शंस में सबसे मेल-मुलाकात होती थी या फिर जब किसी के घर में कोई खास खुशी या गमी हो वरना सब अपने अपने में ही रहते थे।

पाठक जी श्री के घर से चार 'रो-हाउसेज' छोड़कर रहते थे और उनके यहां पूर्णमासी में कथा हुआ करती थी, अक्सर हवन होता रहता था जिसकी आवाजें सुनकर ही श्री बहुत खुश हो जाया करती थी। पाठक जी की पत्नी रंभा उम्र में श्री से कम से कम सात आठ साल बड़ी रही होंगी और उसकी इकलौती बेटी श्री की बेटी के आसपास की उम्र की ही थी (शायद बच्चे देर से हुए होंगे) इसके बावजूद भी वह श्री को दीदी ही कहती थीं।

शर्ली श्री की छोटी बेटी थी जो बड़े बेटे शाश्वत से छोटी थी और फर्स्ट अटेम्प्ट में ही मेडिकल क्लियर कर लिया था और इस समय एमबीबीएस के थर्ड ईयर में थी। रंभा की बेटी मॉडलिंग करती थी और शर्ली की हमउम्र ही थी परंतु दोनों में कभी बातचीत नहीं होती थी। ना हाय, ना हेलो, दोनों ही अपने-अपने एल्टीट्यूड में रहती थीं। श्री ने कई बार शर्ली से कहा, अरे**!** तू ही हेलो बोल दिया कर, परन्तु शर्ली भी कम न थी बोलती थी, "जब वह स्माइल तक एक्सचेंज नहीं करती, तो मैं क्यों हेलो बोलूं? उसे अपने 'पग और पपीज' पर बड़ा घमंड है तो उसे उसके कुत्ते ही मुबारक हों, मेरे पास फ्रेंड्स की कमी थोड़े ही ना है जो मैं सबको हेलो हाय करती फिरूं। सुना है उनके घर में कई अलग-अलग प्रजाति के कुत्ते हैं फिर भी सड़क के कुत्तों को मीठे बिस्कुट खिलाती फिरती है। उन्हें ये भी नहीं पता कि डॉग्स को मीठा नहीं खिलाया जाता है।

श्री : हां बेटा कुछ लोग बहुत ही एनिमल लवर्स होते हैं।

शर्ली : हां और एंटी सोशल भी होते हैं', शर्ली ने मुंह बिचका कर कहा। इंसानों से तो पटती नहीं कुत्तों पर प्यार लुटाते फिरते हैं।

श्री : वह इंट्रोवर्ट भी तो हो सकती है, उससे हमें क्या लेना देना, छोड़ो भी इन बेकार की बातों को।

शर्ली : एनिमल लवर होना भी आजकल लोग फैशन की तरह यूज करते हैं, शो-ऑफ करने के लिए एनिमल लवर्स बन जाते हैं।

श्री : नहीं नहीं मैंने खुद देखा है उसे स्ट्रीट डॉग्स की केयर करते हुए, एक बार जब शर्मा जी की गाड़ी के नीचे एक कुत्ता आ गया था और उसकी टांग टूट गई थी तो वह उसे तुरंत लेकर वेटरनरी डॉक्टर के पास गई थी और प्लास्टर

चढ़वा कर लाई थी और फिर कुछ दिन उसने उसको अपने घर में भी रखा था, फिर ना जाने कैसे कौन उस कुत्ते को उठाकर ले गया।

शर्ली : हां इनकी वजह से ही सड़क के कुत्तों ने भी रोटी खाना बंद कर दिया है और केवल उनके दिए बिस्किट ही खाना पसंद करते हैं।

श्री : हां यह बात तो सच है कि सड़क के कुत्तों ने रोटी खाना बंद ही कर दिया है, बस आते जाते लोगों पर भौंकते हैं और छोटे बच्चों को देखकर दूर तक दौड़ाते हैं। बिना बेंत या छाता लेकर सड़क पर पैदल चलना मुश्किल हो गया है, कभी-कभी तो झुंड बनाकर आ जाते हैं।

शर्ली : हां ममा ये स्ट्रीट डाग्स आपस में भी गैंग वार करते रहते हैं, आपने नोटिस किया है कि वह जो मिसेज पाठक का बॉडीगार्ड टाइप का आदमी है जो कभी सफेद और कभी गेरुआ कपड़े पहनकर पीछे-पीछे चलता है, आजकल वह बेंत नहीं राइफल टांग कर चलता है।

श्री : हां, यह बात तो मुझे भी कुछ अटपटी सी लगी थी कि अरे कुत्ते टहलाने के लिए राइफल लेकर चलने की क्या जरूरत है।

मुझे याद आया कि एक दिन रंभा कह रही थी कि उसकी मलिहाबाद वाली प्रॉपर्टी में कुछ लफड़ा हो गया है, कुछ पुलिस केस वगैरह।

शर्ली : अच्छा, वहां पर क्या है?

श्री : अरे इनकी फैक्ट्री है ना जहां वह गोमूत्र को शोधित कर जीवामृत उर्वरक और फिनायल आदि बनाते हैं जिसका उद्घाटन करने पशुपालन एवं डेयरी विभाग के माननीय मंत्री जी आए थे।

शर्ली : छोड़िए ममा! मुझे इन मंत्री के संत्री और चमचों में जरा भी इंटरेस्ट नहीं है। मैं खूब अच्छी तरह से जानती हूं इन लोगों को।

समय बीता और माँ बेटी की ये बातें आई गई हो गईं। शर्ली अपने हॉस्टल चली गई और श्री भी अपने रूटीन में व्यस्त हो गई। कुछ दिन ही बीते होंगे कि एक दिन काम वाली बाई आई और श्री से बोली- "दीदी जी आपने कुछ सुना?"

श्री : क्या हुआ भई?

बाई : पाठक जी के यहां जो पुजारी था ना उसने अपने कमरे में एक लड़की को छुपा रखा था, बांग्लादेशी लड़की थी, उसका भाई ढूंढते ढूंढते यहां तक आ पहुंचा।

श्री अतिशय आश्चर्य से, अच्छा? क्या कह रही हो?

बाई : हां दीदी जी सच कह रही हूं। और पाठक जी के यहां भी सब को इस बात की खबर थी।

श्री : अच्छा! बड़ी अजीब बात है।

बाई : हां दीदी जी और सुना है कि जब पुलिस आई तो उन लोगों ने उल्टा उस लड़की पर ही चोरी का इल्जाम लगवा दिया। उसे जब पुलिस ले जा रही थी, जाते-जाते वह लड़की चिल्ला चिल्ला कर कह रही थी, चल जा इस्माइल के बच्चे बड़ा आया है पुजारी बनने, हत्यारा कहीं का, रोज लोबान और हवन सामग्री के साथ हवन कुंड में गाय और कुत्ते की हड्डियां जलाता है, जा तेरे बदन में कीड़े पड़ेंगे .....और यह दोनों माँ बेटियां इनको क्या कहें ....टुकुर-टुकुर निहार रही थीं, इनसे बेहतर तो ये कुत्ते हैं जो इनके पैर चाटते हैं और जिनका यह मुंह चूमती फिरती हैं।

अगले दिन अखबार में खबर बड़े-बड़े अक्षरों में खबर छपी कि एक रोहिंग्या भेष बदलकर यहां रह रहा था और वास्तव में वह पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के उस इलाके का रहने वाला था जो 'नोमैंस लैंड' कहलाता है और जहां सुबह 6:00 बजे बीएसएफ के जवान गेट खोलते हैं तो लोग उधर से इधर आ पाते हैं और शाम को 6:00 बजे तक उन्हें वापस लौटना होता है। उन्हें नमक खरीदने के लिए भी अपना आई कार्ड दिखाना होता है। उस एरिया के विकास की जिम्मेदारी कोई भी देश लेने के लिए तैयार नहीं है, ना बांग्लादेश और ना ही भारत। यह वही इलाका है जहां से चोरी छुपे या सांठ-गांठ से गायों की तस्करी होती है।

कुछ दिनों बाद अखबार में एक और खबर किसी कोने में छोटे-छोटे अक्षरों में छपी कि पाठक जी के यहां जो नाबालिग नौकरानी काम करती थी और चोरी करते पकड़ी गई थी उसका दिमागी संतुलन इतना बिगड़ गया कि उसने जुवनाइल जेल के बाथरूम में अपने ही दुपट्टे से फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली जबकि जिस सेल में उसको रखा गया था उसके बाथरूम में छत थी ही नहीं टीनशेड था।

●

कार्यकारिणी अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा 2026

संरक्षक

न्यायमूर्ति डी के त्रिवेदी

अध्यक्ष

ए के त्रिपाठी, एडवोकेट

उपाध्यक्ष, सम्पादक

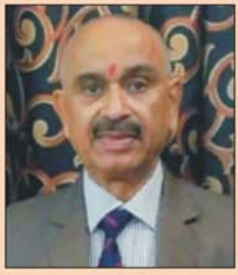

डॉ. डी एस शुक्ला

उपाध्यक्ष

कु.प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा

महासचिव/कोषाध्यक्ष

राकेश शुक्ला

उपसचिव

कृपाशंकर दीक्षित

कोषाध्यक्ष

आर.पी. शर्मा

वरिष्ठ सदस्य

आर पी अवस्थी
एडवोकेट

विशिष्ट सदस्य

डॉ. वी के मिश्रा

धीरेन्द्र कुमार
दीक्षित, एडवोकेट

उप-सम्पादक

डॉ. अनुराग दीक्षित

आतुर प्रकृति

- एम सी द्विवेदी

क्षितिज! तुझमें आतुर आकाश को धरा से मिलते देखा,
बाहों में भरने के प्रयास पर, तू बन जाता है मरीचिका;

आकाश विशाल है- उसका विस्तार एवं विवेक है महान,
फिर भी, 'क्षितिज है मृगतृष्णा', वह इस सत्य से अनजान।

संध्या! तू दिवस की रात्रि से मिलन की है क्षणिक रेखा,
मानव ने तुझको युगों से है, इसी भांति आते जाते देखा;

पलमात्र मिलन और फिर लम्बी रात्रि के तिमिर का वितान,
मिलन की इस क्षणभंगुरता को मानव कब पाया पहिचान?

सरिता! युववय में सागर से मिलने को हो जाती है व्याकुल,
कामिनी बन उफनाती, इतराती, किनारों को ढाती हो आकुल;

पर प्रियतम से मिलते ही, हो जाती है तपस्विनी सम शांत,
बिसारकर उच्छृंखलता, सागर में डूबकर कर देती प्राणांत।

प्रेम! प्रियतम को प्राप्त करने की है असह्य, अदम्य चाह,
प्राप्ति पर प्रीति का ज्वार कुछ दिन, फिर मात्र संतोष अथाह;

याद रहे, हर-हर कर आती सागर की हर प्रचंड लहर,
किनारे से टकराते ही, क्षण में ध्वस्त हो, जाती है ठहर।

•

ऑटिज्म

– **कीर्ति बाजपेई चतुर्वेदी,** यू एस ए

मेरी बचपन की याद- जब मैं लगभग आठ-नौ साल की थी, मेरी मुलाकात मेरे एक चचेरे भाई से हुई। वह मुझसे एक साल छोटा था और गाँव में रहता था। पढ़ाई में वह अच्छा नहीं था। लोग उसे अक्सर "मूर्ख" कहकर मजाक उड़ाते थे। समय बीतता गया, लेकिन वह आठवीं कक्षा भी पास नहीं कर पाया। उसके माता-पिता निराश हो गए और लोग उसे "पगलैट" कहने लगे। मेरे चाचा ने उसे खेती का काम करने को कहा, लेकिन वह कमजोर था और ठीक से काम नहीं कर पाया। बाद में उसने मजदूरी शुरू कर दी। किसी तरह उसकी शादी हो गई और अब उसके बच्चे हैं। जब मैं उससे चार-पाँच साल पहले मिली, वह अब भी लोगों से कम बात करता था और थोड़ा अलग सा लगता था। अब जब मुझे ऑटिज्म के बारे में पता है, तो लगता है कि उसमें ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार के सारे लक्षण थे। उसके माता-पिता को कभी पता नहीं चला, न ही समाज में जागरूकता थी। लोग उसे तंग करते रहे क्योंकि किसी को समझ नहीं था कि यह एक मानसिक स्थिति है।

ऑटिज्म क्या है? ऑटिज्म एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति को दूसरों से बात करने और जुड़ने में कठिनाई होती है। बार-बार एक ही काम करने या सीमित रुचियाँ रखने की आदत होती है। ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार (Autism Spectrum Disorder) यह इसका औपचारिक नाम है। "स्पेक्ट्रम" इसलिए कहा जाता है क्योंकि ऑटिज्म एक अकेली स्थिति नहीं है, बल्कि कई तरह की स्थितियाँ होती हैं। हर व्यक्ति में ऑटिज्म अलग दिखता है। कुछ लोगों को बहुत मदद की जरूरत होती है, जबकि कुछ लोग स्वतंत्र जीवन जीते हैं। ऑटिज्म कोई बीमारी नहीं है। यह दिमाग के काम करने का एक अलग तरीका है। इसका इलाज नहीं है, लेकिन सही समय पर पहचान और मदद से जीवन बेहतर हो सकता है।

लक्षण कब दिखते हैं? ऑटिज्म वाले बच्चों में कोई खास शारीरिक पहचान नहीं होती। यह स्थिति ज्यादातर व्यावहारिक विकास के आधार पर समझी जाती है। कुछ बच्चों में लक्षण पहले बारह महीनों में दिख सकते हैं। कई बच्चे अठारह से चौबीस महीने तक सामान्य विकास करते हैं, फिर नए कौशल सीखना बंद कर देते हैं या पहले सीखे कौशल खो देते हैं।

ऑटिज्म का कारण पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है, लेकिन शोध से यह पता चला है कि इसके पीछे कई कारक हो सकते हैं। मुख्य कारणों में शामिल हैं:

आनुवंशिक (जेनेटिक) कारक : कई जीन (gene) इसमें भूमिका निभाते हैं। कुछ जीन मस्तिष्क के विकास और संचार को प्रभावित करते हैं। ऑटिज्म पूरी तरह से एक ही जीन से नहीं होता, बल्कि कई जीनों के संयोजन से जोखिम बढ़ता है। अगर परिवार में पहले से ऑटिज्म है, तो बच्चे में इसकी संभावना अधिक हो सकती है।

गर्भावस्था के दौरान प्रभाव : गर्भावस्था में संक्रमण, कुछ दवाओं का सेवन, या पर्यावरणीय कारक बच्चे के मस्तिष्क के विकास को प्रभावित कर सकते हैं।

मस्तिष्क का विकास : ऑटिज्म वाले बच्चों के मस्तिष्क में संरचना और कार्य करने के तरीके में अंतर पाया गया है, खासकर उन हिस्सों में जो सामाजिक व्यवहार और संचार से जुड़े हैं।

पर्यावरणीय कारक : प्रदूषण, पोषण की कमी, और अन्य बाहरी कारक भी जोखिम बढ़ा सकते हैं लेकिन इनका प्रभाव आनुवंशिक कारकों के साथ मिलकर होता है। याद रखें- ऑटिज्म का कारण माता-पिता की परवरिश या बच्चे के व्यवहार से नहीं होता। यह एक न्यूरो-विकास संबंधी स्थिति है, जो जन्म से ही मौजूद होती है।

ऑटिज्म के बढ़ते मामले : अमेरिकी स्वास्थ्य विभाग के आँकड़ों के अनुसार सन् 2010 में लगभग अड़सठ में से एक बच्चा ऑटिज्म से प्रभावित था। सन् 2022 में यह बढ़कर इकतीस में से एक बच्चा हो गया। यह बढ़ोत्तरी जागरूकता और बेहतर जाँच के कारण है।

भारत में स्थिति : भारत में जागरूकता बढ़ रही है, विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम (2016) ने ऑटिज्म को मान्यता दी है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षित विशेषज्ञों की कमी और आर्थिक कठिनाइयों के कारण जल्दी पहचान मुश्किल है। अनुमान बताते हैं कि पैंसठ में से एक बच्चा या जनसंख्या का लगभग 3% प्रभावित हो सकता है।

बढ़ते निदान के आंकड़े : हाल के वर्षों में ऑटिज्म निदान (diagnosis) की संख्या में तेज वृद्धि देखी गई है। उदाहरण के लिए, 2010 में यहां लगभग 68 बच्चों में से एक का निदान होता था, जो 2022 तक बढ़कर 31 बच्चों में से एक हो गया। यह बदलाव जागरूकता और बेहतर जांच की वजह से हुआ है। (https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/methink/autism-in-india-challenges-awareness-and-the-road-ahead)

नेटवर्क और इनिशिएटिव्स का विस्तार : शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में ऑटिज्म पर काम करने वाले संगठनों की संख्या बढ़ रही है। जैसे भारत ऑटिज्म केंद्र (आईएसी) और अन्य गैर-सरकारी संगठन न केवल जागरूकता अभियान चला रहे हैं, बल्कि अभिभावकों को प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को प्रशिक्षण

और स्कूलों में समावेशन बढ़ाने का काम भी कर रहे हैं।

Autism in India: Prevalence, Challenges & Support Resource

शिक्षा और चिकित्सा समुदाय की भागीदारी: भारतीय शिशु रोग अकादमी (IAP) व अन्य पेशेवर संस्थाएँ ऑटिज्म के निदान, शिक्षण एवं प्रबंधन के लिए दिशानिर्देश जारी कर रही हैं। कई शहरों में ऑटिज्म सम्मेलनों और जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है, जिससे समाज में चर्चा और समझ बढ़ रही है। 'Limitless - the autism summit' to advance social inclusion and awareness held.

उपचार और मदद : ऑटिज्म का कोई इलाज नहीं है। उपचार का उद्देश्य है बच्चे की सीखने की क्षमता, विकास और व्यवहार को बेहतर बनाना। जल्दी उपचार शुरू करना, खासकर पूर्व-विद्यालय उम्र में, बहुत मददगार होता है। घर और स्कूल आधारित कई तरह की चिकित्सा पद्धतियाँ होती हैं। चिकित्सक और विशेषज्ञ मिलकर सही योजना बना सकते हैं

क्यों जरूरी है जागरूकता?: अगर हम समाज में जागरूकता फैलाएँ, तो मेरे चचेरे भाई जैसे बच्चे और उनके जैसे कई अन्य बच्चों को दया और मदद के साथ पाला जाएगा। शर्म और मजाक की जगह उन्हें सहारा और प्यार मिल सकता है। कई बड़े उम्र के लोग भी ऑटिज्म से प्रभावित होते हैं। ऑटिज्म को "ठीक" करने की बात नहीं है। हमें ऐसे लोगों को समझना और उन्हें सहारा देना है ताकि वे भी अच्छा जीवन जी सकें।

अंत में, मैं यह निवेदन करना चाहूँगी : ऑटिज्म वाले लोग कई बार समाज में संघर्ष करते हैं, क्योंकि लोग उन्हें समझ नहीं पाते। लेकिन सच यह है कि वे कई क्षेत्रों में अद्‌भुत क्षमता रखते हैं। इतिहास हमें बताता है कि आइंस्टीन, न्यूटन जैसे महान लोग भी इस स्पेक्ट्रम पर हो सकते थे। अगर आप किसी को "अलग" देखते हैं, तो याद रखें- वह आलसी या मूर्ख नहीं है। उसके भीतर भी सपने हैं, भावनाएँ हैं, और प्रतिभा है। उसे बस आपकी समझ और सहारे की जरूरत है। भारत में सबसे बड़ी चुनौती है स्वीकार्यता। जागरूकता पहला कदम है, लेकिन हमें उससे आगे बढ़ना होगा। हमें ऐसा समाज बनाना होगा जहाँ हर बच्चा, हर व्यक्ति, चाहे वह कितना भी अलग क्यों न हो, सम्मान और प्यार के साथ जी सके।

सच्ची स्वीकार्यता का मतलब है- हम न केवल जानते हैं कि ऑटिज्म क्या है, बल्कि दिल से मानते हैं कि हर जीवन मूल्यवान है। आइए, हम मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाएँ जहाँ मजाक की जगह मुस्कान हो, ताने की जगह सहारा हो और अलग होने की जगह गर्व हो।

●

आयुर्वेद मर्म
पंचकर्म एक्यूपंक्चर
पेन (दर्द)
AYURVEDIC REMEDIES
MARMA, PANCHAKARMA & ACUPUNCTURE
CLINIC
Looking for relief from pain or discomfort?
We provide Ayurvedic Marma, Panchakarma & Acupuncture services that focus on Bone, Joint and Nerves.
Manage chronic pain
Enhance your overall mobility & function
www.ayurvedicremedies.org
+91-860-1124-100
D 4/426, VIJAYANT KHAND
GOMTI NAGAR, LKO

आध्यात्म

– डॉ. दिनेश चन्द्र अवस्थी
मो.: 7985271239

सरल शब्द में हैं छिपे, लक्ष्मण-सीता-राम।
सरल हृदय को मानिए, पावन तीरथधाम।।

मैं ईश्वर से माँगता, ना हों मुझसे पाप।
सब प्रसन्न मुझसे रहें, मुख्य रूप से आप।।

दूजे पर निर्भर सभी, मिल कर रहिए साथ।
सेवा बायें हाथ की, करता दायाँ हाथ।।

दर्द जरूरी अंग में, इसे करो स्वीकार।
जहाँ दर्द होता नहीं, वही अंग बेकार।।

जग के ये सब कष्ट हैं, बिल्कुल हवा समान।
द्वार बन्द कितना करो, घुस आते शैतान।।

चाहे सब कुछ छोड़ दो, मत छोड़ो ईमान।
यही नहीं है गाँठ में, तो कैसे इंसान।।

अच्छे लोगों पर करें, औषधि सा विश्वास।
ये कुछ कड़ुए हों भले, करें व्याधि का नाश।।

दुख आने में तनिक भी, ना लगती है देर।
वर्षों में बनता भवन, मिनटों में हो ढेर।।

•

मेरे संकोची राम

– विनीता मिश्रा

जब जब राम सकुचाये : दशरथनन्दन राम, कोसलाधीश राम, रघुवंशी राम, रघुकुलतिलक, रघुकुलभूषण, सूर्यवंशी, भानुकुलभूषण, कोसल्यानन्दन राम में बड़े गुण हैं बल्कि गुण ही गुण भरे हैं। भक्तों की सगुणोपासना के इष्ट राम गुणागार हैं। उनके गुणों के कारण उनके भक्त उन्हें करुणासागर, दयानिधि, कृपासिन्धु, दीनानाथ न जाने कितने ही नामों से उनके गुणों को जोड़कर उनकी आराधना करते हैं किन्तु राम का एक बड़ा ही सुन्दर गुण है कि राम बड़े संकोची हैं। मानुष तन धारे राम मनुष्य के भीतर इस संकोची गुण को ऐसे धारण किये बैठे हैं कि उनका यह संकोची स्वाभाव भक्तों के साथ उनके गुरुजनों का भी मन मोह लेता है। यूँ तो शील-संकोच वाला व्यक्ति किसी से कुछ माँगना पड़े तो संकोच से भर जाता है किन्तु हमारे राम तो देते समय भी संकोच से भर उठते हैं:

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ।।

अच्छे स्वाभाव वाला व्यक्ति किसी से कुछ मांगने में संकोच करता है किन्तु राम तो किसी को कुछ देने में सकुचाते हैं। देने वाला सदा दाता या दानी होने के भाव से भर जाता है। बड़ा होने के भाव से भर जाता है। राम निर्गुण क्यों कहलाते हैं? क्योंकि वे इस बड़े होने के भाव से भी मुक्त हैं। बड़ा होना एक गुण है, बड़े होने का भाव होना अवगुण या दुर्गुण है किन्तु इस गुण से मुक्त अवस्था ही निर्गुण है।

बालकाण्ड में सकुचाते राम :

1. परम बिनीत सकुचि मुसुकाई। बोले गुर अनुसासन पाई।।

पहली बार राम जनकपुरी में सकुचाते हुए दिखाई देते हैं जब लक्ष्मण की नगर देखने की इच्छा को पूरा करने के लिए गुरु विश्वामित्र से नगर भ्रमण की अनुमति चाहते हैं। जिस गुरु के आश्रम की राम ने दुर्धर्ष राक्षसों से रक्षा की है, उनके सम्मुख न दंभ, न अधिकार न हठ न मनुहार, केवल संकोच। शीलवान राम मनुज धर्म में संकोच के महत्व का पहला पाठ सिखाते हुए मिलते हैं। नगर भ्रमण में देरी होने से भय के साथ सकुचाते हुए ही राम गुरु के सम्मुख आकर विनम्रता सहित बैठते हैं-

2. सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ।
गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ।।

अवधेशसुत राम, सीता की नगरी में पधारते ही विनय शील के साथ संकोच को भी धारण कर लेते हैं। यह प्रेम की धरती, विदेह की नगरी और सीता का प्रताप है शायद। सीता और राम का प्रेम, संवाद और संकोच के साथ आरम्भ होता है-

3. सकुचि सीय तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे।

विवाहोपरान्त अपनी-अपनी दुल्हनों के साथ विदाई मांगने आये राम का संकोच तो देखिये-

4. बोले रामु सुअवसरु जानी। सील सनेह सकुचमय बानी।।

दामाद का ऐसा आचरण देख भला कौन माता-पिता अपनी कन्या को वर के साथ आनन्दपूर्वक विदा नहीं कर देगा?

मिथिला से संकोच का गुण सीखकर आये हुए राम अब अयोध्या में भी माताओं के सम्मुख दुल्हन सीता के साथ लोकरीति निभाते हुए सकुचाते तो दिखते हैं किन्तु अपने घर में होने के कारण मन ही मन मुस्कुरा भी उठते हैं। कैसा ही सुन्दर दृश्य खींचा है तुलसीदास ने-

5. लोक रीति जननी करहिं बर दुलहिनि सकुचाहिं।
मोदु बिनोदु बिलोकि बड़ रामु मनहिं मुसुकाहिं।।

ऐसे दृश्यों को पढ़ते-गाते हुए किसका मन नहीं लोभित हो उठेगा और अपने प्रिय राम को सकुचाते देख हर भक्त मुस्कुराए बिना न रहेगा।

अयोध्याकाण्ड

अयोध्याकाण्ड तो मानो संकोच रूपी गुण को साधने की पराकाष्ठा का अध्याय है किन्तु इसमें सबसे पहले दशरथ सकुचाते हैं और उनका सकुचाना भयवश है जो राम के संकोच सर्वथा भिन्न है। हम यहाँ राम के संकोच की चर्चा कर रहे हैं इसलिए वह प्रसंग फिर कभी। अभी देखिये माता कौसल्या के सम्मुख राम अपनी पत्नी से कुछ कहते, समझाते हुए कितना सकुचा रहे हैं-

1. मातु समीप कहत सकुचाहीं। बोले समउ समुझि मन माहीं।।

यह वार्तालाप वनगमन से पूर्व का है। पुनः वन से सुमंत्र को वापस भेजते समय लक्ष्मण के द्वारा कहे गए कठोर वचन को पिता दशरथ से न कहने का आग्रह भी शपथ दिलाते हुए पर सकुचाते हुए कहते हैं। लक्ष्मण के बड़े भाई, अयोध्या के

राजकुमार अयोध्या के मंत्री के साथ जैसा शीलवान आचरण प्रस्तुत कर रहे हैं वैसा आचरण अन्यत्र देखने को नहीं मिलेगा-

2. सकुचि राम निज शपथ देवाई। लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई।।

राम ने अपने इस संकोची स्वभाव से किस किसको नहीं अपना बना लिया। बड़े-छोटे का भेद किये बिना सबके साथ विनम्रता के सागर की भांति जो सदा संकोच की सीमा में बंधा रहता है। सबको बंधन मुक्त करने वाले राम स्वयं कितने मर्यादित हैं। शायद यही मुक्ति का मार्ग है 'मर्यादा के बंधन में बंध जाना'। जब केवट की नाव से गंगा पार उतर कर खड़े हुए-

3. केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा।।

वैसे तो राम त्रैलोक देने में समर्थ हैं किन्तु वनवासी की मर्यादा को निभाने वाले राम भला केवट को क्या दे सकते हैं? और कुछ न दे पाने की असमर्थता को भी मनुज रूप में उजागर कर देते हैं।

भरद्वाज मुनि के सम्मुख-

4. सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने। भाव भगति आनन्द अघाने।।

यदि आपको सबसे लालित्यपूर्ण संकोच का भाव कहीं मिलेगा तो यहीं। राम सीता, मार्ग के नर-नारी सब सकुचाते हुए इन सुन्दर पथिकों को देख रहे हैं। पूछना भी चाहते हैं और सकुचाते भी हैं। सत्य ही है, भक्त और भगवान में कोई भेद कहाँ होता है? नर नारी को तो जाने दीजिये, अयोध्याकाण्ड में तो राम के कोमल पदचालन से पृथ्वी भी सकुचा जाती है। भरद्वाज मुनि के सम्मुख राम सकुचाते हैं तो राम के सम्मुख राम की विनम्रता देख वाल्मीकि जैसे मुनि सकुचाकर कह उठाते हैं-

5. पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउं।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउं।।

मुनि की बात से राम फिर सकुचाए और मुस्काए-

6. सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने। सकुचि राम मन महुं मुसुकाने।।

क्या सुन्दर स्वभाव है राम का! एक ओर संकोच से भरे राम केवट के अटपटे बैन सुन मुस्काते हैं, जो भाषा विज्ञान से नितांत परे है और केवल श्रम मजूरी करना ही उसका व्यवसाय भी है और सामर्थ्य भी। दूसरी ओर वाल्मीकि जैसा विद्वान, जिसने संस्कृत जैसी परिष्कृत भाषा में रामायण की रचना कर आदिकवि की उपाधि से

विभूषित हुए। उनके वचन सुनकर भी सकुचाते और मुस्कुराते हैं; क्यों? "क्योंकि रामहि केवल प्रेम पिआरा, जानि लेहु जो जाननिहारा।" और केवट के बैन प्रेम से लपेटे हुए हैं तो वाल्मीकि के वचन प्रेम रस से सने हुए। राम को भाषा, विद्वता नहीं केवल प्रेम बांधता है। फिर चाहे वह केवट का हो या वाल्मीकि का, इसीलिए संतजन कहते हैं राम को विभक्ति (संस्कृत भाषा का व्याकरण) भक्ति भाती है।

पर राम के अति निकट मित्र राम के इस संकोची स्वभाव को जानते हैं और उनसे अनुनय करते हैं कि हम सब आपके सेवक ही हैं अतः हमें किसी भी कार्य की लिए आदेश करने में संकोच न कीजियेगा-

7. हम सेवक परिवार समेता। नाथ न सकुचब आयसु देता।।

और यह सपरिवार सेवा को उद्यत मित्र है निषादराज गुह। अब आते हैं राम के सबसे अधिक प्रिय, दूर रहकर भी राम के सबसे अधिक निकट, एक ऐसे भक्त जो बाहर भीतर से इतने राममय हैं कि लोग उन्हें देखते हैं तो राम ही समझ बैठते हैं, वह है प्रेम के मूर्तिमान स्वरूप भरत। जो राम को मनाने के लिए वन जाने को उद्यत हैं, वे राम के स्वाभाव के बारे में कहते हैं-

8. सील सकुचि सुठि सरल सुभाऊ। कृपा सनेह सदन रघुराऊ।।

जब-जब भरत के मन में द्वन्द की स्थिति पीड़ा होती है तब-तब उनके मन में राम के इसी संकोची स्वभाव का बोध ही उन्हें चित्रकूट की ओर बढ़ने में सहायता करता है कि यदि राम उनसे रुष्ट भी होंगे तो भी राम इतने संकोची हैं कि अपनी रुष्टता प्रकट ही नहीं कर पायेंगे और भरत का कार्य सिद्ध हो जायेगा। प्रयागराज में जिन भरद्वाज मुनि के आगे राम सकुचाए थे, उन्हीं मुनिश्रेष्ठ के आगे भरत संकोच से शीश झुकाए ऐसे बैठे हैं मानों संकोच के घर में जाकर छुप जाना चाहते हों-

9. आसनु दीन्ह नाइ सिरु बैठे। चहत सकुच गृह जनु भजि पैठे।।

भरत के संकोच को कहे बिना राम के इस गुण को पूर्णता नहीं मिलेगी। राम का संकोची स्वभाव पूरी तरह से उजागर ही तब होता है जब चित्रकूट में भरत का आगमन होता है और दोनों भाई अपनी-अपनी बात कहने में सदा संकोच की सीमा में बंध जाते हैं, उसकी मर्यादा में घिर जाते हैं। चित्रकूट में जो प्रेम का सागर उमड़ा है उसकी थाह पाना तो असम्भव है किन्तु जो संकोच प्रकट हुआ है उसको देखना और समझ पाना एक सुखदायी अनुभूति है। कुछ झलकियाँ प्रस्तुत करने का मेरा प्रयास है लेकिन यदि पूर्ण आनन्द लेना है तो रामचरितमानस में ही गोते लगाने पड़ेंगे। राम भरत के साथ अयोध्या लौटेंगे कि नहीं? यह सोच-सोच कर भरत की दशा-

10. निसि न नीद नहिं भूख दिन भरत बिकल सुचि सोच।
नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच।।

जब राम अयोध्यावासियों, मंत्रिगण एवं गुरुजनों के साथ बैठे हैं और भरत के आचरण से सभी संतुष्ट और आनन्दमय हैं तब भाई की प्रशंसा करने में राम अपनी बुद्धि को भी यह कहने में संकोच में पड़ी बताकर सभी से अनुरोध करते हैं कि जो भरत चाहते हैं, हम सभी को वही करने में भलाई समझनी चाहिए-

11. लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई। करत बदन पर भरत बड़ाई।।

आप सभी के सामने मैं अपने ही भाई की प्रशंसा किस प्रकार करूँ? अपने ही भाई की प्रशंसा करने में मेरी बुद्धि सकुचा रही है। बड़ाई मुख से करनी है और संकोच बुद्धि को हो रहा है, यह राम के विवेकशील होने का अनुपम लक्षण है। राम हर भावना के साथ भाव और विवेक दोनों का संतुलन कायम रखते हैं। एक ओर राम संकोच में तो दूसरी ओर उनके अनुकरणीय भरत भी संकोच में डूबे हुए हैं। कोई बात आगे बढ़ ही नहीं रही। तब राम भरत से अपना संकोच छोड़ मन की बात कहने को कहते हैं और उन्हें आश्वासन भी देते हैं कि वह वही करेंगे जो भरत चाहते हैं। भक्त संकोची हो तो भगवान सदा संकोच त्याग मनोकामना को मुख से कहने को प्रेरित करते हैं-

12. मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सोइ आजु।
सत्यसंध रघुबर बचन सुनि भा सुखी समाजु।।

ऐसी ही कुछ बात प्रभु नैमिषारण्य में मनु महाराज को उस समय कहते हैं जब उनके तप से प्रसन्न जो उनकी इच्छित रूप में भगवान दर्शन देते हैं और उनसे मनचाहा वर मांगने को कहते हैं-

13. सकुचि बिहाइ मागु नृप मोही। मोरें नहिं अदेय कछु तोही।।

और मनु जी भगवान के इस रूप पर मोहित हो उनके जैसा पुत्र मांग लेते हैं। प्रभु इस मांग को मान भी लेते हैं। प्रभु का यही स्वभाव जानते हुए भरत को अपनी माँग भी पूरी होने की पूरी सम्भावना प्रतीत होती है पर भरत भी राम के आचरण से कहाँ अलग चलने वाले? वे अपनी माँग को कह नहीं पाते और राम की इच्छा को ही अपनी इच्छा कह देते हैं-

14. अब कृपाल मोहि सो मत भावा। सकुच स्वामि मन जाइ न पावा।।
प्रभु पद सपथ कहउं सतिभाऊ। जग मंगल हित एक उपाऊ।।

भरत जानते हैं कि जगत का हित राम की इच्छा पूरी होने में है, भरत की नहीं। अतः वह भी अपने राम की ही इच्छानुसार कार्य करना शिरोधार्य करते हुए कहते हैं-

15. प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब।
सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि अनट अवरेब।।

इससे पता चलता है कि प्रभु का सच्चा सेवक वही है जो प्रभु की इच्छा को अपनी इच्छा माने और उनकी इच्छानुसार कार्य करने को तत्पर रहे। हम अपनी इच्छा भगवान से कहें या भगवान की इच्छा को पूरा करने में स्वयं को समर्पित कर दें। यथा भगवान तथा भक्त।

सभी अयोध्यावासियों और मिथिलावासियों को अब चित्रकूट से लौट कर वापस नगर को जाना चाहिए। यह अनुरोध भी राम अत्यंत संकोच के साथ गुरु वशिष्ठ से करते हैं। अयोध्या किस विधि जाया जाये? क्या उपाय किया जाये? इसका संकोच स्वामी और सेवक अर्थात् राम और भरत के मध्य निरंतर चलता रहा है। अंततः सभी के विदा होने का उचित दिन जानकर राम संकोच में भरकर जाने को कह ही देते हैं-

16. भल दिन आजु जानि मन माहीं। रामु कृपाल कहत सकुचाहीं।।

पर अयोध्या वापस जाने से पहले सभा जुटी हुई है। कौन किससे क्या कहे? सभी मौन, सभी राम की इच्छा उनके मुख से सुनना चाहते हैं किन्तु गुरुजनों, जनक, माताओं आदि के सम्मुख राम क्या कहें और कैसे कहें? वे स्वयं के द्वारा सबको कुछ भी निर्देश देने में संकोच कर रहे हैं-

17. गुर नृप भरत सभा अवलोकी। सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी।।

भरत राम से उनकी पादुका माँगते हैं तो राम जिस तरह संकोच में भरकर अपने गुरुजनों के सम्मुख भरत को पादुका देते हैं उससे राम की शीलता और विनम्रता के अद्भुत दर्शन होते हैं-

18. भरत सील गुर सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू।।

भरत और राम के प्रेम और संकोच को बताते हुए गोस्वामी जी कहते हैं कि राम और भरत के बीच जो संकोच का रस बह रहा है वह अकथनीय है। उस संकोच मिश्रित स्नेह का वर्णन करने में कवि की वाणी भी सकुचा रही है-

19. सो सकोच रसु अकथ सुबानी। समउ सनेहु सुमिरि सकुचानी।।

सामान्यतः जहाँ अत्यधिक प्रेम होता है वहाँ संकोच समाप्त हो जाता है

किन्तु भरत और राम के इस असीम प्रेम, जिसका वर्णन भी नहीं किया जा सकता उस प्रेम के मध्य ऐसा संकोच व्याप्त है कि उसका वर्णन करने में कविवर की वाणी भी सकुचा गई।

विदा के समय ये संकोची राम अपने स्नेह और सहजता से कैकेयी से भेंट करते समय उनकी सारे संकोच और सोच को मिटा देते हैं। ऐसे हैं कौसल्यानन्दन राम जो हैं तो बड़े संकोची किन्तु सामने वाले के संकोच को अपने व्यवहार से संकोचरहित कर सोचरहित कर देते हैं अर्थात् उसके अपराधबोध को समाप्त कर देते हैं-

20. भरत मातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेह मिलि भेंटि।
बिदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि।।

अयोध्याकाण्ड की सम्पूर्णता इसी संकोच भरे प्रेम के साथ होती है और इसका वर्णन करने में कवि के साथ साथ शेष, गणेश और सरस्वती भी सकुचा जाती हैं-

21. बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं। सेस गनेस गिरा गमुनाहीं।।

राम का संकोच और भरत की प्रेम साधना का व्रत-संकल्प और नियम देख साधु भी सकुचा जाते हैं क्योंकि राम तो वन में वनवास की अवधि पूरी करेंगे जबकि भरत घर में रहकर भी वनवास जैसा तप साधेंगे-

21. सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं। देखि दसा मुनिराज लजाहीं।।

इस प्रकार अयोध्याकाण्ड में राम के संकोच की पराकाष्ठा के दर्शन होते हैं। ऐसे हैं हमारे संकोची राम जो स्वयं को पुत्र रूप में देने में भी संकोच नहीं करते, चरण पादुका हो या लंका का राज्य, दोनों को ही सकुचा कर देते हैं पर जब कुछ भी न दे पाने का संकोच होता है तो केवल केवट का ध्यान आता है। जहाँ हम देखते हैं कि भक्त के प्रेम के बदले में भगवान कुछ दे पाने में असमर्थ हैं। त्रिलोक का स्वामी भक्त के प्रेम के आगे खाली हाथ खड़ा रह जाता है पर जब भक्त कुछ भी लेना स्वीकार नहीं करता तब प्रभु निस्संकोच हो मुक्त भाव से जो प्रदान करते हैं वह हैं प्रभु राम के निर्मल, अविरल, अचल भक्ति। इसीलिए गोस्वामी जी कहते हैं-

बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवट लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ।।

•

लाइफ स्टाइल डिसऑर्डर्स और सर्केडियन रिद्म

- डॉ. डी एस शुक्ला

लाइफ स्टाइल डिसऑर्डर्स से परिचित होने से पहले हमें सर्केडियनरिद्म को समझना होगा-

सर्केडियन रिद्म : हर दिन सूर्योदय से दो घड़ी (डेढ़ घंटे पहले) ब्राह्म मुहूर्त में चिड़ियाँ जाग कर अपने बसेरे से चहचहाने लगती हैं। शीतल, मंद, सुगंध मलय वायु डोलने लगती है। फिर कमल आदि फूल खिलने लगते हैं, भंवरे गुंजायमान हो उठते हैं। समस्त प्रकृति जाग उठती है। दिनचर अपनी दिनचर्या में लग जाते हैं। वहीं हर शाम सूर्यास्त के समय पक्षी अपने बसेरे में लौटने लगते हैं, कमल बंद हो जाते हैं, कुमुदिनी खिलने लगती है। सूर्यास्त होते-होते दिनचर निद्रा की गोद में चले जाते हैं और सर्वत्र शान्ति छा जाती है किन्तु प्रकृति नहीं सोती**!**

रात में निशाचर जीव सक्रिय हो कर अपना शिकार आदि ढूँढने लगते हैं। रात के अंतिम प्रहर आते-आते निशाचर सुस्त होकर निद्रा देवी के शरणागत हो कर निष्क्रिय हो जाते हैं, कुमुदिनी बंद होने लगती है और अगले दिन सूर्योदय के पहले से दिन की हलचल प्रारंभ हो जाने लगती है।

इस प्रकार हमें लगता है जैसे सारी प्रकृति किसी नियत घड़ी से संचालित है। इस प्राकृतिक घड़ी का संचालक है 'सूर्य'। इसलिए बारह आदित्यों में सूर्य एक नाम 'सविता' है। सविता का अर्थ है 'प्रेरक' तथा समय और गति का स्वामी।

अहोरात्रि के चक्र के अलावा आकाश में सूर्य की बारहों राशि में गति से पृथिवी पर ऋतु चक्र भी संचालित होता है। विश्व की भांति सूर्य के प्रकाश से संचालित एक घड़ी हर जीव में अन्तर्निहित है।

पृथिवी के हर चर-अचर जीवधारी सहित स्वयं हमारे शरीर में हमारे शरीर यह जैविक घड़ी सक्रिय है। ये घड़ी जन्मजात है। यह जैविक घड़ी लाखों वर्ष के प्राणी विकास के क्रम में पीढी-दर-पीढ़ी वंशानुगत रूप में सतत रूप से क्रियाशील ही नहीं बल्कि बीतते समय के साथ अपने को जीवों की प्रकृति के अनुसार अपडेट कर रही है।

प्रकाश से संचालित यह घड़ी अहोरात्रि (रात और दिन) शरीर 24 घंटे की एक लय में रखती है। यह शरीर की अंतर्लय या आतंरिक लय है जिसे पाश्चात्य

वैज्ञानिक 'सर्केडियन रिद्म' या 'सर्केडियन लय' कहते हैं। सर्केडियन एक लैटिन शब्द है जो सर्का और डिएस शब्दों से मिलकर बना है। सर्का का अर्थ है 'एराउंड' या चारों तरफ। डियस का अर्थ है दिन। प्रस्तुत सन्दर्भ में एराउंड का अर्थ 'सम्पूर्ण' और डियस का अर्थ 'दिन' होता है। इस प्रकार इस शब्द युग्म का अर्थ का अर्थ सम्पूर्ण (24 घंटे का) दिन लिया जायेगा।

सर्केडियन रिद्म अहोरात्रि (रात और दिन) की लय शरीर की जन्मजात अन्तर्निहित घड़ी का अनुसरण करती है। यह घड़ी सूर्य के प्रकाश और अँधेरे से नियमित होती है जो हमारे सोने जागने के अलावा मानसिक और शारीरिक कार्यों का नियमन करती है। प्रकाश और अन्धकार से नियमित होने के कारण यह घड़ी दिनचर और निशाचरों में अलग तरीके से सेट होती है।

आँखें हमारे शरीर की प्रकाश ग्रहण की बाह्य इन्द्रिय है जिससे ऑप्टिकनर्व द्वारा प्रकाश अति सूक्ष्म विद्युत आवेश के रूप में मस्तिष्क के हाइपोथैलमस में स्थित (सुप्राकाय्ज्मेटिक न्यूक्लिअस) में पहुंचता है। सुप्राकाय्ज्मेटिक न्यूक्लिअस के न्यूरांस (नर्व सेल) के अणुओं में प्राकृतिक मोलिक्यूलर क्लॉक अर्थात आणविक घड़ी होती है जो मस्तिष्क में सोने और जागने की लय का नियमन करते हैं।

सूर्य के प्रकाश से मस्तिष्क के मेड्युला और पोंस में स्थित 'एराउजल रिसेप्टर्स सक्रिय हो जाते हैं और मनुष्य नींद से जाग जाता है। रात के अँधेरे से मोलिक्यूलर क्लॉक अर्थात आणविक घड़ी ऑफ हो जाती है जिससे एराउजल सेंटर्स निष्क्रिय होने लगते हैं और मिडब्रेन में स्थित नींद लाने वाले सेंटर्स सक्रिय होकर नींद का आह्वान करते हैं।

नोटः- हाइपोथैलमस शरीर के समस्त ऐच्छिक-अनैच्छिक क्रियाओं का नियामक या कंट्रोलर है, रहती है। दिन भर की थकान के बाद रात के अँधेरे से एराउजल सेंटर्स के निष्क्रिय होने और नींद से सेंटर्स के सक्रिय होने के अलावा रात के अँधेरे में मस्तिष्क से मेलाटोनिन और गाबा नाम के दो केमिकल निकलते हैं। मेलैटोनिन दिल की धड़कन, सांस की गति कम कर मांसपेशियों को शिथिल कर मांसपेशियों और अन्य ऊतकों की टूट-फूट की मरम्मत भी करता है। वहीं गाबा मस्तिष्क की सक्रियता को कम करके गहरी नींद का कारक बनता है।

हर रात नींद शरीर को विश्राम देकर निष्क्लांत कर अगले दिन पुनः कर्म करने के लिए ऊर्जित करती है। इसलिए नींद को देवी पुनर्नवा (पुनर्नवा = पुनः नवीन या नया करना) कहलाती है। नींद का कारक होने के अलावा यह आतंरिक घड़ी अन्य कई हारमोंस के द्वारा हमारी समस्त पाचन, श्वसन, दिल की गति आदि

क्रियाओं का हमारी दैनिक क्रियाओं का आवश्यकतानुसार नियमन और संचालन करती है।

हममें से अधिकतर लोगों को शरीर की दैनिक क्रियाओं के नियमन का एहसास भी नहीं होगा। अतः वे इसके महत्त्व का अनुमान नहीं लगा सकते। शरीर में जन्मजात जैविक घड़ी होने का बोध या संज्ञान होना और उसका अनुसरण करना मानव के स्वस्थ जीवन की संजीवनी बन सकता है।

आदिम मनुष्य इसी जैविक घड़ी से सोता जगता और अन्य व्यक्तिगत तथा सामाजिक दायित्व संपन्न करता था। परन्तु जैसे-जैसे मनुष्य सभ्यता के सोपान चढ़ते हुये कथित रूप से सभ्य और सुसंस्कृत होने के साथ मानव जीवन की जटिलताओं व सुख सुविधा के कारण प्रकृति से दूर होने लगा, उसकी शारीरिक क्रियाएं शरीर की जैविक घड़ी के प्रतिकूल होने लगीं।

रात में अँधेरे के स्थान पर कृत्रिम प्रकाश का होना, सोने के समय जागते रहना, भोर में जब शक्ति और स्फूर्त करने वाले हारमोंस शरीर को 'तस्मात्त्वंउत्तिष्ठ' (तुम जाग्रत हो कर उठो) का संदेश दे रहे होते हैं, उस समय देर रात तक जागा मानव सो रहा होता है। जब खाना चाहिए तब भूखा रहता है आदि-आदि। लाखों करोड़ों वर्षों से एक नियत दिनचर्या का अभ्यस्त जीव को नई दिनचर्या में थोपने पर मस्तिष्क कन्फ्यूज्ड होकर तनाव में आने लगता है। इस तनाव से शरीर में अनेकों प्रकार की शारीरिक और मानसिक व्याधियां होने की संभावना बढ़ जाती है। ये व्याधियाँ अब 'लाइफ स्टाइल डिसार्डर्स' या 'जीवन शैलीपरक व्याधियाँ' के नाम से जानी जाती हैं। डायबिटीज, ब्लडप्रेशर, दमा के अलावा त्वचा पर सोरायसिस, एन्जाय्टी, इनसोम्निया (नींद न आना) तथा विषाद जैसी शारीरिक एवं मानसिक 'जीवन शैलीपरक व्याधियां' आम होती जा रहीं हैं।

देखा गया है कि रात की शिफ्ट में काम करने वाले या देर तक सोकर सुबह देर से उठने वाले लोगों में मोटापा, स्लीप एप्नियाँ ऊपर लिखी व्याधियों की कारक बनती हैं।

इसलिए हमें चाहिये, हम यथासंभव अपनी दिनचर्या को शरीर की जैविक घड़ी के अनुरूप चलने का प्रयास कर 'जीवेत वर्षशतं सोपि सर्व व्याधि विवर्जित' (सभी प्रकार की व्याधियों से सुरक्षित रहते हुये सौ वर्ष तक जियें) के स्वस्ति वचन को फलीभूत करें। ॐ

•

C.V. NETRALAYA

CP 6A, Viram Khand-2, Gomti Nagar,
Lucknow
Mob. : 80525 10018

Centre of Comprehensive Eye Care

Eye Surgeon
Dr. V. K. Mishra

कुक्कुर गाथा

– **तिलक शुक्ला,** रायबरेली

ज्योतिष में बारह राशियाँ होतीं हैं। दुनिया की सारी जनसंख्या इन बारह राशियों में बंटी होती है। इन बारह राशियों में से एक निश्चित क्रम से तीन राशियों पर शनि महाराज की साढ़ेसाती हमेशा चलती रहती है। यानी भारत की जनसँख्या का चौथा भाग सदैव शनि के प्रकोप से ग्रस्त रहता है।

शनि महाराज को सर्वोच्च न्यायाधीश कहा जाता है। वह शनि की यह दशा हर तीस वर्षों में एक बार प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आती है। जीवन में तीस वर्षों के अंतराल में आने वाली साढ़ेसाती दशा में शनि महाराज मनुष्य को उसके कृत शुभाशुभ कर्मों का फल देते हैं।

कहते हैं इस काल में मनुष्य को बहुत बाधाओं और आपदाओं का सामना करना पड़ता है। जो व्यक्ति सद्कर्मों के साथ इन कठिनाइयों का सामना करता है, वह बहुत ही प्रभावी होकर निकलता है।

जनश्रुति है कि, शनि की साढ़ेसाती में ही सगी माँ से अधिक स्नेह करने वाली माँ ने राम को वनवास दिलाया, वन में उन्हें घोर कष्ट मिला। राम जैसे विवेकी पुरुष स्वर्ण मृग से मोहित हुये किन्तु जब समय ठीक हुआ तब सागर में पत्थर भी तैर गए। पता नहीं यह कहावत सत्य है कि नहीं परन्तु यह तो तय है कि साढ़ेसाती काल में कठिनाइयां अपेक्षाकृत अधिक आती हैं।

शनि की दशा से बचने के लिये पंडित तमाम उपाय बताते हैं। इन उपायों में काले कौवे और काले कुत्ते को घी चुपड़ी रोटी खिलने का विधान है। कौवे वातावरण क्षरण के कारण दुर्लभ हो गये हैं। कुछ कहते हैं कि परिवारों में फ्रिज आ जाने से, मानव अपना बासी और जूठा स्वयं खाने लगा और कौव्वे बिचारे भूखों मर गए। मगर मेरा अपना वैज्ञानिक मत है कि मेहमानों के आगमन की सूचना अब मोबाइल और ई मेल से मिल जाती है। अतः कौव्वों की समाज में कोई जरूरत नहीं बची सो अन-उपयोग के कारण उनकी जनसँख्या स्वतः कम हो गई। पश्चिम के दृष्टा ऋषि श्री लेमार्क जी का भी मत था (हालांकि डार्विन ने उसे गलत सिद्ध कर दिया)।

अब बचे काले कुत्ते। वे भी आजकल गूलर का फूल हो गए। एक पशु चिकित्सक के अनुसार इस जाति की मादायें भी अब रंगभेद-ग्रंथि से ग्रसित हो

गई हैं। इस कारण ये मादाएं श्यामवर्णी कुत्तों से अभिसार नहीं करतीं। पाश्चात्य देशों में पुरखों की गलती के कारण श्वेत चमड़ी वाले परिवार में काले बच्चे पैदा की पैदाइश की तरह, एकदम काला कुत्ता भी अब मोहल्लों में मुश्किल से मिलता है।

अब आप अंदाजा लगायें कि मोहल्ला जिसकी आबादी लगभग 4000 है, तो चौथाई यानी कि मोहल्ले में 1000 लोगों पर शनि की साढेसाती चल रही होती है। सौभाग्य से यदि उस मोहल्ले में भगवान् का दिया एक ही काला श्वान है, तब आप उस एकलौते काले कुत्ते की दशा का अंदाजा लगा सकते हैं, जिसे शनिवार के दिन 1000 शनि-दशा-पीड़ितजन घी चुपड़ी रोटी खिलाने का प्रयास कर रहे हों। एक हजार घी चुपड़ी रोटी हजम करने का का माद्दा 25 किलो के कुत्ते में क्या, बड़े-बड़े पेटू और कसरती पहलवानों में भी नहीं होगा।

मोहल्ले का यह काला कुत्ता शनिवार को मिलने वाली घी चुपड़ी रोटियों को हजम करने के निमित्त जुम्मे की शाम से ही उपवास पर चला जाता है। शनिवार की भोर होते ही शनि पीड़ित जन हाथ में रोटी लेकर निकल पड़ते हैं। एक घंटे में ही कुत्ते का नाचीज पेट घी चुपड़ी रोटियों से भर जाता है। अब कुत्ता तो कुत्ता है। वह बाबा जी के जमाने के वांछित अपराधियों की भाँति गले में तख्ती बाँध कर तो घूम नहीं सकता- कि "हे शनि पीड़ितों मैं अब और नहीं खा सकता"। अतः वह बिचारा उदर के ओवरलोड होने पर किसी कोने-इतरे में छुप जाता है पर भक्त-गण उसे वहां भी ढूंढ निकालते हैं। उस समय मानव की दशा आप देखें तो लगेगा कि कुत्ता तो मानव और उसके सामने हाथ में घी चुपड़ी रोटी लिये मानव कुत्ते की तरह दुम हिला रहा है। लोग रोटी कुत्ते के मुँह से लगा कर याचना करता है- "हे कुक्कुर श्रेष्ठ, मेरी रोटी ग्रहण कर मुझे उपकृत करे"। किन्तु कुत्ता मानिनी नायिका की तरह अपना मुँह दूसरी ओर फेर लेता है।

शनि पीड़ित निराश होकर चल देते हैं किन्तु केवल दो-तीन घंटों के लिये। इस अंतराल के बाद वे पुनः इस आशा से कुत्ते जी को एप्रोच करते हैं कि संभवतः अब उनका पेट कुछ खाली हुआ हुआ होगा। किंतु क्या मोहल्ले में वे ही शनि पीड़ित हैं? कुत्ते के पेट में जगह होते ही मोहल्ले के अन्य पीड़ितों ने उसे फिर से लबालब भर दिया होता है।

मोहल्ले के एक बुजुर्ग के इंस्ट्रक्शन पर रोटियों का साइज कम करने पर श्वान एक बार में ज्यादा लोगों की रोटियाँ एक्सेप्ट करने लगा किन्तु कुछ लोग

असंतुष्ट फिर भी रह ही जाते हैं। इसके अलावा हर मंगल और शनिवार को हनुमान मंदिर के सामने एक बार फिर यही दृश्य दिखता है।

मंदिर प्रांगण के इर्द-गिर्द निवसित को कुत्तों को शुद्ध देशी घी(...?) के बेसन के लड्डू खाने को मिलते हैं, जिन्हें कुत्ते बड़े आराम से गटक लेते हैं। अब कुत्ते तो कुत्ते ही हैं। वे नहीं जानते कि ज्यादा शकर खाने से वजन और तोंद में अप्रत्याशित रूप से इजाफा होता है। सो आज की कोमलांगियों के उलट वे जी भर कर लड्डुओं का सेवन करते हैं। नतीजा (आप स्वयं गौर करियेगा), मोहल्ले के मंदिर के सामने रहने वाले कुत्ते अब मोटे होकर कुत्ते सुवर की तरह लगने लगे हैं। हद तो तब हो गई जब एक दिन जब सुवर पकड़ने वाले मुंसीपाल्टी गैंग ने सूअरों के धोखे मंदिर के सामने के कुछ कुत्तों को भी उठा लिया।

शनि की दशा से निजात दिलाने वाले अमोघ उपाय माने जाने वाले श्वानों को मुंसीपाल्टी ने किडनैप कर लिया! हंगामा हो गया! महापालिका के जोनल आफिस का घेराव हो गया। अधिकारी ने, जैसे कि चलन है, जनता की बातों का यकीन ही नहीं किया। परन्तु बढ़ती भीड़ के आक्रोश को शांत करने अधिकारी स्वयं स्वरों के बाड़े में पहुंचे। वे सन्न रह गये। पकडे गये सुवरों के झुण्ड में उन्हें तीन-चार सुवरनुमा कुत्ते भी कैद दिखे। यह सुवर-यष्टिधारी कुक्कुर हाते में एक किनारे अलग खड़े थे क्योंकि बाड़े के बाहर खड़े कुछ साढ़ेसतियाये जन इन कुत्तों को यहाँ भी घी चुपड़ी रोटी जिमा रहे थे।

गेस करें कि यह कुत्ता है या सुवर?

•

नेता जी मेमोरियल टोकियो में श्रद्धांजलि देते
केयर टेकर के साथ श्री अनुपम बाजपेयी

Netaji's ashes, Renkoji Temple, Tokyo- tokyotravelsRenkoji Temple in Tokyo houses ashes believed to be those of Netaji Subhas Chandra Bose, a significant figure in India's independence movement. The ashes were placed there on September 18, 1945, following his presumed death in a plane crash in Taiwan on August 18, 1945, a claim supported by some historical reports but still debated and a source of ongoing speculation. The temple has become a pilgrimage site for Indian.

जिनके सहयोग के हम आभारी हैं

1.	आशा दीक्षित स्मृति पति स्व. रामकृष्ण दीक्षित	6400/-
2.	गंगा प्रसाद तिवारी	6000/-
3.	राजन दीक्षित स्मृति माता जी	5100/-
4.	मीनू द्विवेदी	5000/-
5.	एस एम त्रिपाठी, चीफ फार्मेसिस्ट, बलरामपुर हॉस्पिटल	4500/-
6.	श्रीमती शैल मिश्रा स्मृति पति स्व. जी.पी. मिश्र (आईए.एस.)	4000/-
7.	श्रीमती मिथलेश मिश्रा आर.के मिश्र स्व. स्मृति पुत्री सोनल मिश्रा	3500/-
8.	सर्जन परेश शुक्ला	3500/-
9.	इं. देवेश शुक्ला	3500/-
10.	ब्रिग शीतांशु मिश्र	5000/-
11.	श्री टी.एन. मिश्रा स्मृति पुत्री नंदिनी शुक्ला	4500/-
12.	श्री टी.एन. मिश्रा स्मृति पत्नी स्व. विमला मिश्रा	3400/-
13.	श्रीमती दिव्या बाजपेयी स्मृति नाना- स्व. रायबहादुर	
14.	पं. उदित नारायण पाठक आफ सिसेंडी	1500/-
15.	श्रीमती दिव्या बाजपेयी स्मृति माँ स्व. शैलेन्द्र कुमारी शुक्ला	1500/-
16.	श्रीमती मनोरमा त्रिपाठी स्मृति पुत्री स्व. डा. अर्चना	1000/-

होली मिलन आयोजन में योगदान

1.	गंगा प्रसाद तिवारी	21000/-
2.	रोली तिवारी	2000/-
3.	पं. प्रमोद शंकर जी शुक्ल	2000/-
4.	डा. डी.एस. शुक्ला स्मृति मौसी स्व. उर्मिला मिश्रा	2000/-

विज्ञापनदाता कान्यकुब्ज वाणी

1.	मेघदूत उद्योग	5000/-
2.	भारत मेडिसिन	3000/-
3.	वी.के. नेत्रालय	3000/-
4.	शंकर गेस्ट हाउस	3000/-
5.	आयुर्वेदिक मेडिसिन	3000/-

नकद छात्रवृत्ति पाने वाली छात्रायें

1- गंगा प्रसाद तिवारी स्मृति पिता स्व. राममोहन तिवारी
सुधी उमेश तिवारी कक्षा x, महमूदाबाद, सीतापुर 2100/-

2- गंगा प्रसाद तिवारी स्मृति माताजी स्व. कमला तिवारी वंशिका तिवारी
कक्षा v, अकबरपुर, दरियाबाद, बाराबंकी 2100/-

3- आराध्या लवलेश तिवारी कक्षा x सर्वोदय हाईस्कूल बम्हेरा,
सिधौली 4000/-

4- शगुन उमेश द्विवेदी, कक्षा xii बालविद्या मंदिर लखनऊ 2000/-

5- श्रद्धा लवलेश पांडे ग्रीनफोर्ड प्रीमियर स्कूल बख्शी का तालाब 2000/-

6- अनन्या मिश्रा कक्षा viii, बालनिकुंज विद्यालय बख्शी का तालाब 2000/-

7- सुधी उमेश तिवारी कक्षा x, महमूदाबाद, सीतापुर

साइकिल पाने वाली छात्रायें

1- रागिनी सतीश शर्मा, दयानंद इंटर कालेज, लखनऊ

2- शिवांशी प्रमोद मिश्र, कक्षा 8, दयानंद इंटर कालेज, लखनऊ

3- कीर्ति विजय शंकर मिश्र, कक्षा ix, दयानंद इंटर कालेज, लखनऊ

4- शिंजिनी सुनील मिश्र, कक्षा ix, दयानंद इंटर कालेज, लखनऊ

5- खुशी सरोज अवस्थी, लखनऊ

6- सृष्टि हरिशंकर मिश्रा कक्षा vi इंटर कालेज शेखुपुर निगोहाँ

7- छाया संजय मिश्र BA-II, नवयुग कन्या डिग्री कालेज, लखनऊ

सिलाई मशीन प्राप्त करने वाली महिलायें

1- अनीता देवी पत्नी सरोज अवस्थी, लखीमपुर पत्नी

2- संध्या देवी पत्नी दया शंकर जोशी, लखनऊ

3- मनोरमा तिवारी पत्नी धर्मेन्द्र तिवारी

4- माधुरी पत्नी योगेन्द्र बाजपेयी

सूची एवं पोस्टल एड्रेस कान्यकुब्ज वाणी आभा मण्डल

3, संरक्षक-अनुदान **रु. 10000.00 मात्र**

1- न्यायमूर्ति श्री डी के त्रिवेदी (अव.प्रा.) 9415152086,
6/169, विनीत खंड, गोमतीनगर, लखनऊ 226010

2- श्रीमती नीरा शर्मा पत्नी डा राजीव शर्मा आई ए एस
7A,डी-1 ओल्ड बंदरिया बाग, लखनऊ-226001

3- डा राजीव शर्मा आई ए एस, 9810722663
7A,डी-1 ओल्ड बंदरिया बाग, लखनऊ- 226001

4- श्रीमती रोली तिवारी, 9839882747, 7007369467
592-घ/01/07 Moharibagh, Near Mohari Bagh Masjid, Telibagh, Lucknow-226029

8 वाणी पुत्र-अनुदान **रु. 5000.00**

1- डा यूडी शुक्ल (स्व)
अनुप्रिया क्लीनिक, सी-20/179 सेक्टर एच, आशियाना,
एल डी ए कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ

2- डा वी के मिश्रा मो.: 9415020426
CV नेत्रालय, मनीषा मंदिर के पीछे, विराम खंड-3, गोमती नगर
लखनऊ, 226010

3- स्व.इं. एस. एन. मिश्रा
O 84-रवीन्द्र गार्डेन, सेक्टर एम, अलीगंज, लखनऊ-226024

4- ललित कुमार बाजपेयी 9415034368
दक्षिणी जहानाबाद, आर्य समाज मंदिर के पास, रायबरेली

5- उदयन शर्मा s/o डा राजीव शर्मा
7A,डी-1 ओल्ड बंदरिया बाग, लखनऊ-226001

6- श्री प्रमोद शंकर शुक्ल 9450558657
सुरजूपुर, रायबरेली-229001

7- इंदेवेश शुक्ल 9450591538
आशियाना, लखनऊ

3 अति-विशिष्ट सदस्य अनुदान रु. 3000.00

1- श्री रामजी मिश्र, 9450379054
माखूपुर, खैराबाद, सीतापुर-261131

2- आर्क. अनुराग शुक्ला, 9415580950
निकट कृष्ण विहार कालोनी गेट, रायबरेली रोड, लखनऊ-226002

3- श्रीमती सुमन शुक्ला, 9838005179
D-80 केशव विहार, कल्याणपुर, रिंग रोड, लखनऊ

13 विशिष्ट सदस्य अनुदान रु. 2000.00

4- श्री सूर्य प्रकाश बाजपेयी, 9335159363
C-1/367 सेक्टर-एच, एल डी ए कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ-12

5- श्री उपेंद्र मिश्र, 9415788855
4/53 विशाल खंड, गोमती नगर, लखनऊ-226010

6- डा आर एस बाजपेयी

7- डा आर के मिश्र, 9415012333

8- पं. विनोद बिहारी दीक्षित (स्व)

9- पं. विजय शंकर शुक्ल (स्व)
10/304 इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016

10- डी के बाजपेयी, 9621479044
Omaxe Residency, 1, lilac-C, Flat no- 802, Gomtinagar
Ext. Sect.7, Sultanpur Road, Arjunganj, Lucknow-226002

11- प्रो. पीपी त्रिपाठी, 9450551394
वी.टी.एम. हास्पिटल, छोटा धूसाह, बलरामपुर-271201, बलरामपुर

12- डा प्रांजल त्रिपाठी, 9919879799
वी.टी.एम. हास्पिटल, छोटा धूसाह, बलरामपुर-271201

13- डा निधि त्रिपाठी
वी.टी.एम.हास्पिटल, छोटा धूसाह, बलरामपुर-271201, बलरामपुर

14- डा बी एन तिवारी, आई ए एस

15- मीरा शिवेन्दु शुक्ल, 9721756269
2A/67-आजाद नगर, कानपुर

16- लक्ष्मी कान्त शुक्ला
निकट कृष्ण विहारी कल्पनी गेट, रायबरेली रोड, लखनऊ-226002

17- पी के दीक्षित, 7905913042, 9838922347
स्नेहनगर, आलमबाग, लखनऊ-226005

18- सू. मेज. (रिटा.) आर एन तिवारी, 9893555368
592GA मोहरीबाग खरिका तेलीबाग, लखनऊ-226006

19- प्रवीण शुक्ला, 9919331095
15/230 प्रभुटाउन, रायबरेली-229001

20- श्रीमती माधुरी शुक्ला, 9151190422
चूने वाली गली, स्वरूप नगर, कानपुर

21- अखिलेश बाजपेयी, 9415023874
सी-1/367, सेक्टर-एच, एलडीए कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ-226012

22- डी सी अवस्थी, 7985271239
विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ-226010

57 आजीवन सदस्य अनुदान **रु. 1000.00**

21- श्री जितेंद्र कुमार त्रिपाठी, 9307222027, लखनऊ

22- पं भारतेन्दु त्रिवेदी, 9451194337
बमरौली हाउज, रम्पा टाकीज रोड, सीतापुर-261001

23- श्री रमारमण त्रिवेदी
ब्रह्मावली सदन, रम्पा टाकीज रोड, गांधीनगर, सीतापुर-261001

24- श्री के के त्रिवेदी, 9415020510
C-784, Sect-C, महानगर, लखनऊ-226006

25- श्री आर सी त्रिपाठी, 9415012040
ए-1055 लेखराज मार्ग, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016

26- श्री नवीन कुमार शुक्ल, 950666731
सेक्टर आई-ई 3/798 अलीगंज स्कीम, अलीगंज-226024

27- श्रीमति मीनू द्विवेदी, 9336166380
कानपुर 208002

28- इं बसंतराम दीक्षित, 9335075482
181 विजय नगर, कानपुर रोड, लखनऊ-226005

29- श्री सुधीर कुमार पांडे, 9415521031
52/166 भैरोंप्रसाद रोड, बड़ा चाँदगंज, लखनऊ

30- श्रीमती अर्चना तिवारी
E-59, सेक्टर-3, एनटीपीसी/ टीटीपी एस TALCHAR THERMAL POWER STATION, TALCHAR, ANGUL, ODISHA-759101

31- एडवो. कु. प्रेमप्रकाशिनी मिश्र, 9415026087
244/73 याहियागंज रोड, लखनऊ

32- श्री अनिल कुमार त्रिपाठी, 9415524848
14ए सिविल लाइंस, सीतापुर-261001

33- ब्रिगेडियर सीतांशु मिश्र, 9454592411
ए-22, त्यागी विहार कालोनी, शारदानगर, लखनऊ-226002

34- श्री कृपा शंकर दीक्षित, 9455713711
61/15 तिलूपुरवा, हुसेनगंज, लखनऊ

35- डा अनुराग तिवारी, 9415735630
2/346 डी, आजाद नगर, कानपुर-208002

36- श्री आर के शुक्ल, 9919623121
115, इंफीनिया पार्क, स्पेन्सर के पीछे, उदयन-2, एल्डिको,
रायबरेली रोड, लखनऊ-226002

37- डा आर सी मिश्र, 05226521353
फ्लैट नं 6/706, आरकिड ब्लाक, एल्डिको पार्क व्यू अपार्टमेंट,
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020

38- श्री विनोद कुमार मिश्र, 9919740633
60/10 इन्दिरा नगर, फतेहपुर 84, उन्नाव

39- श्री राजकिशोर अवस्थी, 9956084970
88, विष्णुलोक कालोनी, मानस नगर, साक्षारता निकेतन के पीछे,
कानपुर रोड, लखनऊ-226023

40- डा पी एन अवस्थी, 94153308555
C-50, निराला नगर, लखनऊ

41- श्री कौशल किशोर शुक्ल, 9335968454
3/51 गीतापल्ली कालोनी, आलमबाग, लखनऊ-226005

42- श्री विनय कुमार शुक्ल,9450350878
9/102 जवाहरनगर, रूरा, कानपुर देहात-209303, उत्तर प्रदेश

43- श्री मनीकान्त अवस्थी, 7607479838
87, खुर्शेदबाग, लखनऊ

44- श्रीमती अनुराधा शुक्ला पत्नी त्रयंबकेश्वर प्रसाद शुक्ला
खालीसहाट, रायबरेली

45- इं स्व. के बी शुक्ल, 9415004466
4/132A, विशाल खंड, गोमती नगर, लखनऊ-226010

46- श्रीमति हेमादिनेश मिश्रा, 9721975102, लखनऊ

47- श्री ब्रह्मशंकर दीक्षित, 9415049660
569क/108/4 स्नेहनगर, आलमबाग, लखनऊ

48- श्री शंभुप्रसाद पांडे, 9450717711
मलीहाबाद, लखनऊ

49- इं एस एस शुक्ल, 9450761403
2/306 सेक्टर A, जानकीपुरम, लखनऊ

50- श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी, मो. 9415115951
14/738, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016

51- श्री ज्ञानसिंधु पांडे, 8765531281
L-अ-L/231 सेक्टर L, आनंदनिकुंज, अलीगंज, लखनऊ-226024

52- श्री डी एन दुबे, आई ए एस, 9415408018
20/31 इन्दिरानगर, लखनऊ- 226016

53- श्री श्रीकांतदीक्षित, 9415766901
252-सेक्टर N-1 अलीगंज, लखनऊ-226024

54- उमेश चंद्रमिश्र, 9305245599
B-305, 'निर्माण', महानगर, लखनऊ

55- डा ओंकार नाथ मिश्रा, 9415022957
3/416, विश्वास खंड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

56- श्री अश्वनी कुमार शुक्ल, पंकाली चरण धाम, शिवनगर, लोढ़िगंज के पास, जीटीरोड फतेहपुर-212601

57- श्री राघवेंद्र मिश्र, 9918001628
2/78, विपुल खंड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

58- प्रफुल्ल कुमार पाठक, 7388192190
बन्नावाँ, बछरावाँ, रायबरेली

59- श्री आत्मप्रकाश मिश्र, 9415018200
3/132 बी, विपुल खंड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

60- श्री समीर बाजपेयी, 9415306363
35, कृषि संस्थान, नैनी, इलाहाबाद-211007

61- श्री राकेश कुमार मिश्र, 9335209896
सतगुरु सहाय निगम रोड, नगरिया, ठाकुरगंज, लखनऊ-226003

62- डा एस के त्रिपाठी, 9335917261
'आकांक्षा', 21 एल्डिको, पोस्ट-भदरुख, तेलीबाग बाजार के पास, लखनऊ-226002

63- श्री राजेशनाथ मिश्र, 9454292354, (पूर्व) सीनियर टाउन प्लानर (लखनऊ)
289/9 ब्लंट स्क्वायर (दुर्गापुरी), लखनऊ-226004

64- मालती विजय शंकर मिश्रा, 9336704017
डी-2156 इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016

65- राम कृपाल त्रिपाठी
182, इन्कम टैक्स कोआपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी, विनायकपुर, लखनऊ

66- सुरेन्द्रनाथ त्रिवेदी, 93352230767
25, मानस विहार, कूर्माञ्चल नगर, लखनऊ-226016

67- राकेश कुमार शुक्ला, 9005409001
मनोरमा सदन, खयालीगंज, लखनऊ

68- विमल कुमार जेटली, 9451246381
448/252ख, नगरिया, ठाकुरगंज, लखनऊ, 226003

69- श्री एस के मिश्रा
211बी, पार्क इंफीनिया, उदय नई, एल्डिको, रायबरेली रोड,
लखनऊ-226025

70- डा. परेश शुक्ला, 094-153-1745, 9793346656
C-2/179 सेक्टर-H, LDA कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ-226012

71- डा. एस एन शुक्ला, 9415464288
6, निराला नगर, लखनऊ

72- डा. राकेश शुक्ला (न्यूरोफिजीशियन)
कबीर मार्ग, सिंचाई भवन के सामने, लखनऊ

73- सर्वेश मिश्रा, 9086761122
चीफ मैनेजर IOB, विवेक खंड-1, ई-3/7 आम्रपाली योजना,
हाउसिंग बोर्ड, हरदोई रोड, लखनऊ,

74- डा अनुराग दीक्षित, 7007904857
डी-4/426, विजयंत खंड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

75- सुशील दीक्षित, 9415025097
569क/108/04, स्नेहनगर, आलमबाग, लखनऊ-226005

76- गंगा प्रसाद तिवारी, 8318859466

77- शारदा प्रसाद तिवारी, 9305421993

78- श्रीमती स्नेहलता तिवारी, 8935083183
4/बी, गजानन सहकारी समिति, निकट ए.के.टी.यू., जानकीपुरम विस्तार,
लखनऊ- 226021

79- सौमित्र बाजपेयी, 9473837390
27/23, मानस गार्डेन कालोनी, बीबीडी यूनिवर्सिटी के पीछे,
अखिलेश दास कालोनी, फैजाबाद रोड, लखनऊ-226028

80- निर्मल कुमार S/o स्व. श्री सुन्दर लाल मिश्र
एम-1020, सेक्टर-एम, आशियाना, कानपुर रोड, एलडीए कालोनी,
लखनऊ-226012

81- वीरेन्द्र कुमार शुक्ला S/o स्व. श्री राजेश्वरी प्रसाद शुक्ला
9सी/261, वृन्दावन योजना, लखनऊ

82- अजय त्रिवेदी पुत्र श्री कृष्णकांत त्रिवेदी
सी-2/79, विशेष खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

83- श्रीमती सरला शुक्ला, पत्नी अमेन्द्र नाथ शुक्ला
293/199, पुराना हरिहर नगर, लखनऊ-3

बाहरी प्रान्तों के सदस्य

विशिष्ट सदस्य-

1- अनामिका शर्मा, 09990455986
ए-81, 1st फ्लोर, निकट आर्य समाज मंदिर, मालवीय नगर,
नई दिल्ली, 110017

आजीवन सदस्य-

2- डा. आर के त्रिपाठी, देहरादून, उ.खंड, मो 09935478815

3- Neeraj Trivedi, Mob: 09837077564
Gyanlok Colony, Behind Gaya Trilok Apartment, Byepass Road
Haridwar (U.K.) 249408

5- यतीन्द्र कुमार दीक्षित, दिल्ली, मो.: 98184343377
D-1241,अशोक नगर, स्ट्रीट-78, शाहदरा, दिल्ली-93

6- राम अवस्थी, मो 09820026914
Flat A/1403, Newa Gardens, Plot No-1 Sect- 20A, Near MSEB Substation Airoli, AiroliPatni Road, Airoli Navi Mumbai-400708, Maharaashtra

7- अशोक कुमार तिवारी, मो 09300104481
Block No- 5, Ganga Sagar Colony Behind BT Bungalow,
P.O. Gaira Jabalpur, M.P.-482003

8- अशोक कुमार पाठक, मो. 09407290639
Near Trivedi Printers, Kasturaba Ward, Pipariya,
Hoshangabad, M P-461775

9- वैज्ञानिक अलका दीक्षित, 011 32320268
Solid State Physics Lab. (SSPL), Timarpur, Delhi-110054

10- श्रीमती सविता दुबे, W/o Mohan Prasad
KIDZEE Plot No-1 Behind KCD Quarters, Barkotri Road,
Dharvad, Karnatak-580003

11- देवेन्द्र कुमार शुक्ला, मो 09414075174
C-100, Vidyut Nagar, Chitrakoot Road, Jaipur, Rajasthan-302021

12- पं. शिवशंकर तिवारी, मो.: 09490119947, 090300511007
2-4-48, 1st floor, Tewari Sadan, M.G. Road, Ramgopal pet,
Sikandarabad, Andhra Pradesh-500003

12- Shishir Kumar Bajpai S/o Late B N Bajpai Mob. 09899041178
987 Housing Board Colony, Sect-29, Faridabad,
Hariyana- 121008

13- प्रदीप चंद्र तिवारी, मो 094140977679, ई-मेल
misra.suman07@yahoo.com
5/45 गोवर्धन विला, RHB कालोनी, एचआईजी स्कीम, रेयान
इन्टरनेशनल स्कूल के सामने, उदयपुर, राजस्थान-313002

14- डा. अश्वनी कुमार बाजपेयी
आदर्शनगर, छतरपुर, मध्य प्रदेश

15- श्रीमति मनोरमा त्रिपाठी, 9783160465
7/358 सेक्टर 7, मालवीय नगर, जयपुर, राजस्थान-302017

दूरस्थ देश के सदस्य

15- Viajy Shukla Cc/o Dr. Girish C. Shukla
Shukla Villa, A4-18, PaschimVihar, NEW DELHI-110 063

अति विशिष्ट सदस्य (अफ्रीका)

16- जितेंद्र पांडे, युगांडा 9638145145, 876547694
Local: 301, Paramount Apartment,
New Berry Road, Behind Ganna Sanasthaan, Dalibagh,
Lucknow-226001

17- अनुराग शुक्ला
मैरीलैंड, वाशिंगटन, सयुंक्त राष्ट्र अमेरिका

•

मूँछ और बम काण्ड (सत्य घटना)

– पी के दीक्षित

मूंछ और बम काण्ड शास्त्रोक्त परमपिता परमेश्वर ने संसार में 84 लाख योनियों का सृजन किया। इनमें से मनुष्य योनि प्रभु की सर्वोत्तम कृति है। मनुष्य योनि में उसने पुरुष और स्त्री दो रूपों की रचना की, इससे सृष्टि का विस्तार आज तक हो रहा है। बच्चा जब जन्म लेता है तो वह बालक हो या बालिका, वह 5-6 वर्ष तक शारीरिक रूप से लगभग एक जैसा ही दिखता है। इसके पश्चात बालक में अलग और बालिका में अलग-अलग शारीरिक परिवर्तन होने लगते हैं। भगवान कभी-कभी ऐसी पवित्र रचना कर देते हैं जिसमें पुरुष और स्त्री के शरीर का मिश्रण हो जाता है। समाज में इस रचना को थर्ड जेन्डर का नाम दिया गया है। आदरणीय डा. डी.एस. शुक्ला जी ने अपनी पुस्तक (2012) में इस विषय को बहुत ही सुंदर ढंग से लिखा है। बालक में 17-18 साल की उम्र आने तक उसके चेहरे पर दाढ़ी और मूँछ की रेखाएं आने लगती हैं। बसवारा की भाषा में कहें तो लोग कहते हैं कि भइया के मूँछ की र्याख आने लगी है। यह सुनकर बालक का पिता अति प्रसन्न होता है और उसके विवाह के बारे में सोचने लगता है। कुछ शादी कराने वाले लोग उसके देखुआ लाने लगते हैं। पिता भी बेटे को शादी 2 विवाह और अन्य शुभ कार्यों में बढ़िया कपड़े आदि पहनाकर साथ ले जाता है और सब मिलने वालों और नाते रिश्तेदारों से उसका परिचय कराता है। जैसे जैसे उम्र बढ़ती है और 24-25 वर्ष की उम्र आने तक र्याख पूर्ण मूँछ और दाढ़ी पूर्ण आकार ले लेती है।

वर्तमान समय में मूँछ का चलन अधिक नहीं रह गया है लेकिन 1950-60 के दशक में मूँछ रखना एक शान होती थी और लोग तरह तरह की मूँछ रखते थे जैसे तलवारकट मूँछ, गलमूंछ, जो मूँछ दाढ़ी की कलम तक मिली रहती है। मूँछ जिसकी नोक नीचे की तरफ रहती है। महाराणा प्रताप की तरह की मूँछ, बुकुनमूँछ जिसके बाल उतने ही बडे होते हैं जैसे कि 8-10 दिन दाढ़ी न बनाई हो। इस पर लोग हाथ फेर सकते थे लेकिन ऐंठ नहीं सकते थे। तलवार कट मूँछ रखने वाले लोग एक दूसरे के परिचित होने पर बाजार या मेले में, कोर्ट कचेहरी में आमने-सामने पड़ने पर अपनी मूँछें ऐंठ कर एक दूसरे को ललकारते थे और अपनी शान ऊंची करने का प्रयास करते थे। बसवारी भाषा में इसे मूँछों पर ताव देना कहते हैं। उन्नाव रायबरेली रोड पर अचलगंज के पास एक गांव बेथर है

जिसकी 80 प्रतिशत आबादी कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की है। ब्राह्मण की एक 3 विशेषता होती है कि विद्वता और बुद्धिमत्ता में सदैव अपने को सर्वश्रेष्ठ समझता है जिसके कारण उसमें क्रोध और अंहकार की मात्रा कुछ अधिक ही होती है। इसके साथ उसके ऊपर लक्ष्मीजी की कृपा और साथ में जनबल और सामाजिक प्रतिष्ठा हो जाय तो फिर क्या कहना। वही कहावत है कि सोने में सुहागा।

गांव में एक मिश्रा परिवार था। सन 1945 के आस-पास उसके परिवार में काफी गरीबी थी। मिश्राजी पंडिताई करते थे। उनके 5 लड़के थे। पंडितजी के सारे लड़के जवान हो गये तो परिवार में जनबल बढ़ गया। कुछ समय बाद उनके ऊपर लक्ष्मी जी की अपार कृपा हो गयी। पंडितजी का एक लड़का किसी माध्यम से बम्बई चला गया और वहां पर भिन्डी बाजार में नशीले पदाथों का व्यापार करने लगा। भिन्डी बाजार आज भी सभी प्रकार के अनैतिक कार्यों और देह व्यापार के लिए मशहुर है। इस प्रकार नशीले पदार्थो का व्यापार करके उसने बहुत धन कमा लिया जिससे उन्होंने गांव में काफी जमीन खरीद लिया और बढ़िया मकान बनवा लिया। उन्होंने सन् 1955 में अपने यहां ट्रैक्टर लिया था जो उन्नाव जिले में पहला ट्रैक्टर था। गलत तरीके से अर्जित किया गया धन मनुष्य की मति भ्रष्ट कर देता है। मिश्राजी के 4 लड़के गांव में रहते थे जिनमें से दो खेती किसानी और व्यापार (पैसा ब्याज पर उठाना और समय पर न देने पर ब्याज पर ब्याज लेना, इस पर भी अगर आदमी डिफाल्टर हुआ तो जबरदस्ती औने-पौने में उसकी जमीन लिखा लेते थे) करते थे। 2 भाइयों का काम पूरे गांव सहित परिवार में दादागिरी, गुन्डई, गरीबों को सताना, उनकी बहन-बेटियों के साथ गलत व्यवहार करना था। इनमें से एक का नाम लाखन महराज और दूसरे का नाम चन्दन महराज था। परिवार में लाखन महराज का ही बोलबाला था। अच्छा लम्बा-चौड़ा शरीर, गौरवर्ण, तलवारकट काली घनी मूँछे थीं। उनके साथ कम से कम बीस आदमी चलते थे। सभी तरह के असलहों से लैस रहते थे। कुछ पिछलग्गू भी चलते थे जो खाने-पीने के चक्कर में महराज की झूठी तारीफ किया करते थे कि भइया के जोड़ की पर्सलान्टी जवार में नहीं है। लाखन महराज उस जमाने में उत्तम कोटि की बुलटप्रूफ जाकेट पहनते थे।

मिश्रा परिवार का आतंक जब गांव और जवार में चरम सीमा पर पहुंच गया तो कुछ परिवार गांव छोड़कर उन्नाव और कानपुर में बस गये और कुछ स्वाभिमानी परिवार उनका बराबरी करने के लिए एक गैंग का गठन कर लिया। इनमें मुख्य रूप से दीक्षित परिवार के मुखिया फुल्लर महराज और तिवारी परिवार के मुखिया लालता तिवारी प्रमुख थे। फुल्लर महराज के बाबा ब्रिटिश सरकार में

सर्किल इंस्पेक्टर (आज के समय के डिप्टी एस.पी.) होकर सन 1933 में रिटायर हुए थे। उन्होंने सुल्ताना डाकू की गिरफ्तारी में अंग्रेज एस.पी. नम.फ्रेन् ड्यूंग के साथ अहम भूमिका निभाई थी जिनका नाम श्री ब्रज किशोर दीक्षित था। इस कार्य के लिए उन्हें राय साहब की उपाधि प्रदान की गयी थी। उनके पास भी अनैतिक तरीके से और घूस लेकर अकूत सम्पत्ति थी। उन्होंने भी लाल पत्थर की हवेली बनवाई थी और तमाम जमीन जायदात बनाई थी। उनके घर में भी सुख सुविधा की सभी सामग्री थी और नौकर-चाकर सेवा में लगे रहते थे।

दूसरा परिवार तिवारी परिवार था। उसके मुखिया लालता तिवारी थे। उनका कद साढ़े चार फुट का था लेकिन वह भारी गलमुच्छ रखते थे और अकड़कर चलते थे। उनके यहां गांव और उन्नाव में किराने का थोक का व्यापार था। वह ब्रिटिश समय के ग्रेज्युएट थे। उन्नाव में छोटे चौराहे पर आज भी उनकी बिल्डिंग बनी हुई है जिस पर भगवान शंकर जी की मूर्ति बनी है। वह भी धनवान व्यक्ति थे। उनके बारे में एक कहावत मशहूर थी कि कद के छोट मूँछ के भारी, आवत हैं लालता तिवारी।। मिश्राजी के बड़े लड़के का नाम तो राजकुमार मिश्र था लेकिन गांव और जवार में उन्हें लोग काका कह कर सम्बोधित करते थे। काका के पास जैसे जैसे धन और जनबल बढ़ता गया, उनका आंतक गांव और जवार में फैलता गया। काका का आतंक इतना बढ़ गया कि अगर वह हाथी पालें तो दूसरा नहीं पाल सकता था। अगर वह कुत्ता पालें तो दूसरा नहीं पाल सकता था। काका ने विवाह नहीं किया था। उन्हें क्रोध बहुत जल्दी आता था। गांव के कुछ खुराफाती लोग लगा बुझा कर काका और फुल्लर महराज गैंग को लड़वा दिया। एक दो बार तो गोली तक चल गयी थी।

देश आजाद हो गया था लेकिन बड़े आदमियों की राजशाही और तानाशाही नहीं गयी थी। बाजार में एक दिन काका के सामने दो आदमियों ने मूँछ ऐंठ दी तो काका को इतना गुस्सा आया कि काका ने अगली बाजार के दिन बाजार और पूरे गांव में डुग्गी पिटवा दी कि "सुनो सुनो आम और खासजनों को सूचित किया जाता है कि गांव में अगर कोई व्यक्ति उनसे बडी मूँछ रखता है, तो काका उसकी मूँछ उखड़वा लेंगे। वह व्यक्ति अपनी जान माल का स्वयं जिम्मेदार होगा।" पूरे गांव के दबंगों ने काका के भय से अपनी मूँछें बुकुन करा दी केवल लालता तिवारी को छोडकर। फुल्लर महराज ने भी अपनी मूँछें बुकुन करा दीं।

लालता तिवारी एक दिन फुल्लर महराज को मिले तो फुल्लर महराज ने तिवारी जी से पूंछा कि चाचा आपने मूँछें नहीं बनवाई। क्या आपको काका का

आदेश नही मालूम। लालता तिवारी ने कहा फुल्लर तुम भी डर गये। महराज ने कहा चाचा अभी एक महीना पहले हमारे पिताजी का देहान्त हुआ है और घर के बड़े लड़के होने कारण घर की बागडोर हमारे ही हाथ में है। अगर काका ने मूँछें उखड़वा ली तो बड़ी बेज्जती होगी। तिवारी जी ने कहा कि उस काका की ऐसी की तैसी हम तो मूँछ नहीं बनवाएंगे। लगभग 15 दिन बाद लालता तिवारी बाजार में अपने दो साथियों के साथ घूम रहे थे। सामने से काका अपने 10-12 असलहधारी आदमियों के साथ आ रहे थे। जैसे ही लालता तिवारी और काका का आमना सामना हुआ, काका ने अपने आदमियों को ललकारा कि इस नाकटयल मुच्छड़ को गिराकर इसकी मूंछों का एक-एक बाल नोच लो। इतना कहना था कि काका के 5-6 आदमी लालता तिवारी पर टूट पड़े और जमीन पर गिराकर दोनों हाथ पकड़ कर लालता तिवारी की मूँछ का एक एक बाल नोच लिया। काका ने चलते वक्त लालता तिवारी के एक लात मारी और कहा कि मेरी बराबरी करता है साला। अब इसको गांव में नहीं रहने देंगे। तिवारी जी की मूँछ की जगह खून छलछला आया था। कुछ लोग उनके चेहरे पर अगौंछा बांध कर किसी तरह उन्हें उन्नाव ले गये।

दूसरे दिन फुल्लर महराज तिवारी जी को उन्नाव उनकी कोठी पर देखने गये। तिवारी जी अपने कमरे में मुंह पर अगौंछा बांधे लेटे हुए थे। महराज ने चाचा के चरण स्पर्श किया तो तिवारी जी के आंखों से झर झर आंसू बहने लगे। महराज ने कहा, चाचा हमने आपको समझाया था लेकिन आप नहीं माने। इधर उधर की बातचीत होती रही। महराज ने कहा कि चाचा, काका ने आपको बड़ा अपमानित किया इससे हमें बड़ा कष्ट है, रात भर सो नहीं सका। यह सोचता रहा कि चाचा के अपमान का बदला काका से कैसे लिया जाय। कुछ देर गांव के लोगों की बातचीत होती रही फिर महराज बोले कि चाचा हम काका की मूंछ उखाड़ तो नहीं सकते लेकिन फूंक जरूर सकते हैं। इतना सुनते ही लालता तिवारी तुरन्त उठकर ऐसे बैठ गये जैसे मरणासन्न आदमी को संजीवनी बूटी मिल गयी हो। तिवारी जी ने पूंछा फुल्लर कैसे। महराज ने कहा कि काका का एक भाई मुम्बई में नशीले पदार्थों का काम करता है, वह अक्सर तरह तरह के सामानों का पार्सल गांव भेजता रहता है। बस बम्बई जाकर साथ में बम बनाने वाले आदमी को ले जायेंगे और सिंगारदान के आकार का शक्तिशाली बम बनवाकर पार्सल द्वारा भेज देंगे। साले दो चार मर जायेंगे और कुछ घायल हो जायेंगे। तिवारी जी खुश होकर बोले फुल्लर बहुत बढ़िया प्लालिंग की है। महराज बोले चाचा इसमें खर्चा थोड़ा ज्यादा आयेगा क्योंकि बम बनानेवाला आदमी पंजाब में रहता है। उसने आजादी की

लड़ाई में लाहौर असेम्बली में फेंकने वाले बम बनाये थे। अब थोडा बूढ़ा हो गया है। उसे लेने पहले पंजाब जाना पड़ेगा फिर 3-4 आदमी उसको लेकर बम्बई जायेंगे।

तिवारी जी बोले, फुल्लर तुम खर्चा की चिन्ता न करो, बताओ कितना खर्चा आयेगा। महराज कुछ देर सोच कर बोले यही कोई 4 हजार रुपये के आस पास। तिवारी जी अपने अपमान में इतना जल रहे थे कि तुरन्त मुनीमजी को बुलवाया और बोले मुनीम जी 4500 रुपये अभी फुल्लर महराज को दे दो और इनके लिए बढ़िया मिठाई और नास्ता की व्यवस्था करो। यह बात सन 1951-52 की है, उस समय के 4500 रुपये आज के कम से कम 5 लाख के बराबर होंगे। खैर महराज ने मिठाई नास्ता किया और पैसे लेकर चाचा से बोले कि चाचा अगौंछा खोलो जरा चेहरा देख लें। तिवारी जी रूआंसे से होकर अगौंछा खोला तो महराज ने देखा कि उनके चेहरे पर मूँछ का एक बाल भी नहीं बचा था और खून छलछलाने की बूंदें पड़ी थीं।

महराज ने कहा कि काका ने बहुत गलत किया अब तो इसको और इसके आदमियों को जिन्दा नहीं छोड़ेंगे। महराज पैसे लेकर रिक्शा करके उन्नाव में ही मोतीनगर मोहल्ले में रहने वाले अपने गुरु महेश मिश्र के यहां आये। वह मूल रूप से घाटमपुर (उन्नाव) के रहने वाले थे। घाटमपुर में महराज का ननिहाल था। इस रिश्ते से मिश्राजी महराज के मामा लगते थे। वह महराज गैंग के प्लानर और असलहों के व्यवस्थापक थे। महराज ने मिश्रा जी को पूरा किस्सा सुनाया। मिश्राजी ने कहा कि उन्नाव में इस घटना की बड़ी चर्चा है। मिश्राजी ने कहा, फुल्लर सबसे पहले बम बनाने वाले को चिट्ठी डाल दो, उसका नाम पता हमारे पास है। साथ में उसको 200 रुपये का मनीआर्डर कर दो। उसमें लिख दो कि तुरन्त चले आओ, जरूरी काम है। इसके बाद एक आदमी अचलगंज पोस्ट आफिस भेजकर काका के भाई जो बम्बई में रहता है, उसका पता मंगा लो। महराज ने उसी दिन दोनों काम कर दिये। खैर 10 दिन बाद बम बनाने वाला आदमी पंजाब से उन्नाव आ गया। मिश्राजी ने पूरा किस्सा उसको सुनाया और कहा कि बम्बई से एक पार्सल बम बेथरगांव भेजना है। वह आदमी कुछ देर सोचता रहा और फिर बोला साहब हो जायेगा। उसने कहा बारूद यहां से लेते चलो बाकी सामान वहां मिल जायेगा। पटाखा बनानेवाला एक चेला मिश्राजी के पास था, उससे उन्होंने एक सेर बारूद उत्तम क्वालिटी की मंगवा ली।

दो दिन बाद महेश मिश्र, महराज, बम बनाने वाला आदमी और एक चेला, कुल चार आदमी कानपुर से बम्बई जाने वाली ट्रेन से बम्बई के लिए रवाना हुए।

मुम्बई पहुंच कर काका के भाई के पते भिन्डी बाजार पहुंच कर एक धर्मशाला में दो कमरे किराये पर लेकर ठहर गये। दूसरे दिन काका के भाई के घर की रेकी की और उसके घर के अनुसार जो पोस्ट आफिस लगता था, उसकी जानकारी हासिल की। फिर महराज और बम कारीगर कबाड़ी मार्केट से बम बनाने का अन्य सामान बैटरी, तार, लोहे के छर्रे और टुकड़े आदि खरीदा। इसके बाद एक फीट बाई डेढ़ फीट का मखमली लाल रंग का सिंगारदान खरीदा। भिंडी बाजार के पोस्ट आफिस के बाबू से जानकारी ली कि एक अर्जेन्ट पार्सल उन्नाव के अचलगंज पोस्ट आफिस भेजना है। उससे पूरी जानकारी ले ली कि अर्जेन्ट पार्सल कब और कौन सी गाड़ी से जाता है। चारों लोग मुम्बई में एक हफ्ते रहे और मुम्बई की बढ़िया सैर भी तिवारी जी के पैसे से की। महराज ने कारीगर से कहा कि जरा शक्तिशाली बम बनाना जिसके फटने से कम से कम 1-2 मर जायें। कारीगर ने कहा, इसके लिए बारूद के साथ तेजाब की भी व्यवस्था करनी पड़ेगी।

खैर दूसरे दिन तेजाब लाया गया। कारीगर ने बम तैयार करके उसमें ऐसा सिस्टम फिट किया कि सिंगारदान खोलने वाले दोनों स्विच में कनेक्शन फिट किया। इससे सिंगारदान खोलते ही बम फट जायेगा। बम सिंगारदान का बढ़िया पार्सल बनाकर भिन्डी बाजार के पोस्ट आफिस से पोस्ट कर दिया गया और भेजने वाले की जगह काका के भाई का नाम और पता लिख दिया। बम कारीगर को पैसे देकर पंजाब के लिए रवाना कर दिया। बचे तीन लोग उसी गाड़ी के तीन टिकट ले लिये जिससे पार्सल आ रहा था। दो दिन बाद यह लोग कानपुर पहुंच गये। पार्सल कानपुर स्टेशन के आर.एम.एस. (रेलवे पोस्टल सर्विस) में रिसीव हो गया। दूसरे दिन कानपुर से उन्नाव पोस्ट आफिस आया और चौथे दिन उन्नाव से अचलगंज पोस्ट आफिस पहुंच गया। महराज और मिश्राजी पार्सल के पीछे पीछे लगे रहे। अगले दिन पोस्ट मैन साइकिल से अचलगंज पोस्ट आफिस से पार्सल लेकर बेथर के लिए रवाना हुआ। साइकिल से महराज और मिश्राजी पोस्ट मैन के पीछे-पीछे बेथरगांव के लिए रवाना हुए। जब पोस्ट मैन गांव में चला गया तो यह दोनों लोग गांव के बाहर एक आम की बाग में छिप कर बैठ गये। बेथर में आत्मदीन नाम के एक ग्रामीण स्तर के कवि हुए थे, जिनकी कविताएं महराज मुझे बचपन में सुनाया करते थे, जिनकी चार पंक्तियां आज भी मुझे याद हैं-

कुईं (कुआं), मनई, बेनई (बाड़ या मेढ़) तीन। बाग में चाहिए आत्मदीन।।
आँवला, हर्र, बहेड़ा तीन। उत्तम औषधि आत्मदीन।।

काका अपने यहां तिपाये की एक चारपाई बनवाई थी, जिसका साइज 5

फीट बाई 7 फीट था जिस पर 10-12 आदमी आराम से बैठ जाते थे। उसका नाम महतारी रखा था। जब कोई प्लानिंग बनानी होती थी तो घर के 10-12 लोग उसी पर एक साथ बैठ कर मंत्रणा करते थे। जब मुम्बई से कोई पार्सल आता था तो उत्सुकतावश घर के सभी लोग उस पर बैठकर पार्सल बीच में रख कर खोलते थे। करीब आधा घन्टे बाद इतनी तेज का धमाका हुआ कि गांव के बाहर बाग में बैठे दोनों लोगों को काफी तेज सुनाई दिया। मिश्राजी और महराज समझ गये कि काम हो गया। गांव के 40-50 लोग काका के घर के बाहर इकट्ठा हो गये। इस धमाके में 3 लोग बुरी तरह जख्मी हो गये और 5-6 लोगों को हल्की चोट आईं। गांव के लोगों ने मिलकर जल्दी जल्दी सभी घायलों को ट्रैक्टर की ट्राली में लादा और उन्नाव इलाज के लिए रवाना हुए। जब ट्रैक्टर ट्राली से काका के लोग गांव के गलियारे से जा रहे थे तो मिश्राजी और महराज ने बाग के भीतर से झांककर देखा तो ट्राली के नीचे से गरियारे में खून टपक रहा था। उन्नाव अस्पताल पहुंचते पहुंचते गंभीर घायलों में एक की मत्यु हो गई। दोनों लोग उन्नाव आ गए और लालता तिवारी को खबर सुनाई। महराज ने कहा, चाचा काम हो गया आपके अपमान का बदला ले लिया। काका ने अपने खबरी गांव में छोड़ कर पता लगवाया कि फुल्लर गांव में था कि नहीं। खबरियों ने बताया कि काका फुल्लर गांव से 10-12 दिन से गायब है। इस बमकाण्ड के बाद लालता तिवारी फुल्लर गैंग के सक्रिय सदस्य हो गये और लिखा पढ़ी और पैसों से मदद करने लगे। इस काण्ड से काका बहुत क्रोधित हुए और फुल्लर और लालता तिवारी को जान से मरवाने के लिए 2-3 बार गाड़ा लगवाया। इसलिए लालता तिवारी परिवार सहित गांव छोड़कर उन्नाव और महराज परिवार सहित बीघापुर पलायन कर गये। यह लड़ाई 10-12 वर्षों तक चली जिसमें काका के दो भाइयों लाखन महराज, चन्दन महराज तथा उनके दो भतीजों सहित 8-10 लोगों की हत्यायें हुईं। लालता तिवारी के जानने वाले दिल्ली में सेंट्रल एक्साइज कमिश्नर थे। तिवारी जी उनसे मिलकर काका के भाई के खिलाफ दरखास्त देकर उनके बम्बई के भिन्डी बाजार स्थित नशीले पदार्थों के गोदाम पर छापा डलवाया जिसमें उस समय में लाखों रुपये का नशीला सामान बरामद हुआ था। फुल्लर महराज गैंग की आर्थिक हानि जरूर हुई पर जन हानि नहीं हुई। इस प्रकार न्याय और अन्याय की लडाई में न्याय की जीत हुई। कहानी में लोगों के नाम, स्थान और घटनाएं लेखक ने अपनी कल्पना से लिखा है। इनका किसी सतय घटना से संबंध नहीं है।

स्नेह नगर, आलगबाग लखनऊ मो.: 7905913042

●

नव संवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

उचित मूल्य पर विश्वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

भारत
मेडिसिन कम्पनी

शहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखनऊ

विशेषता :

जो दवाएँ शहर की अन्य दुकानों पर उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।

दूरभाष : 9336666322,0522–6568011
पंडित जी (तिवारी जी) का अंग्रेजी दवाखाना

मेरी मामी और चार्वाक दर्शन

- डॉ. डी एस शुक्ला

मानता हूँ कि शीर्षक चौंकाने वाला है पर आप मेरी मामी से अपरिचित हैं। आप क्या मामी की पुत्रवधू और मेरी बहन रूबी को छोड़ कर शायद ही कोई शेष हो जो मामी को इतने करीब से जानता हो।

मेरी मामी विदुषी थीं। उनका विवाह 1949 में हुआ था जब मैं मात्र ढाई वर्ष का था किन्तु उनके विवाह की घटनाएँ स्टिल फोटो की भांति मेरे मस्तिष्क में आज तक अंकित हैं। उस काल में महिलाओं की शिक्षा रामायण बांचने तक और उपयोगिता केवल विवाह और संततिदायिनी होने तक सीमित थी। ऐसे कालखण्ड में मामी (महादेवी जी द्वारा स्त्री शिक्षा के उद्देश्य से स्थापित प्रयाग महिला विद्यापीठ से) 'साहित्य रत्न' थीं। साहित्य रत्न सम्मान प्राप्त डिग्री थी। इसे औपचारिक शिक्षा के एम.ए. के समकक्ष माना जाता था। उन्नाव (मेरे ननिहाल) में जब जनसाधारण और भद्रलोक घर में बैसवारी प्रचलित थी उस काल में मामी की शुद्ध, शिष्ट खड़ी बोली अच्छे-अच्छे सुशिक्षित लोगों के लिए विस्मय और ईर्ष्याजनित परिहास का विषय थी।

मामी काफी धार्मिक होने के कारण उनके आगमन से नाना जी के सौजन्य से गीता प्रेस की 'कल्याण' और 'परमार्थ' पत्रिका नियमित रूप से हर माह मामी के लिए आने लगी। मामी की तत्कालीन संत 'पथिक' जी पर बड़ी श्रद्धा थी और उनके सीख का वे अनुकरण भी करती थीं। जिज्ञासु और वाचाल होने के कारण मुझ पर उनका विशेष स्नेह था। मैं उनका बहुत बड़ा फैन था। उनकी बच्चों के लिए कहानियाँ भी अधिकतर शिक्षाप्रद होती थीं। ननिहाल में उनकी कहानी सुने बिना मुझे न चैन आता थी और न नींद।

पथिक जी की शिक्षाओं के अनुरूप चौथेपन में उन्होंने अपनी आवश्यकतायें और आहार न्यूनतम कर ली थीं। आँखों में मोतियाबिंद होने पर मेरे पास आ कर केवल एक आँख का आपरेशन कराया। दूसरे का इसलिए नहीं कराया कि जब एक आँख से काम चल सकता है तब व्यर्थ ही सब को कष्ट क्यों दिया जाय।

तपस्वी दिनचर्या के चलते वे बहुत कृशकाय हो गयीं। मिलने पर मैंने डॉक्टरी सलाह छौंकी "कुछ खाया पिया करिये"। इस पर हँसते हुये वे बोलीं- "तुम्हारे भले के लिए ही अल्पाहार करती हूँ। ज्यादा खाने से वजन बढ़ेगा। तुम्हें और बाबू (उनका ज्येष्ठ पुत्र) को कंधे पर ले जाने में कष्ट होगा।"

मैंने हँसते हुये एक श्लोक सुनाया सुनाया- "यावज्जीवेत सुखंजीवेद ऋणंकृत्वा घृतंपिवेत।"

उन्होंने हंसते हुयेकहा- "तुम चार्वाक के शिष्य हो"?

बात आई-गई हो गयी।

अगले दिन चलते समय जब उन्हें प्रणाम करने गया तो उन्होंने आशीर्वाद देते हुये मेरा हाथ पकड़ कर अपने पास बैठा कर बोलीं- "कल तुमने विनोद में चार्वाक श्लोक का एक अंश सुनाया था। इस पर वर्षों बाद आज फिर मैं तुम्हें एक कहानी सुनाती हूँ- चार्वाक एक ऋषि परंपरा है जो राम के युग से भी प्राचीन है। चार्वाक दर्शन भारत का प्रमुख भौतिकवादी दर्शन है। यह दर्शन आत्मा, पुनर्जन्म और परलोक को स्वीकार नहीं करता। इहलोक ही सब कुछ है, इसके बाद कुछ भी नहीं। फिर चार्वाक का पूरा श्लोक-

यावज्जीवेतसुखंजीवेदऋणंकृत्वाघृतंपिवेत,
भस्मीभूतस्यदेहस्यपुनरागमनंकुतः।।

उद्धृत करते हुये समझाया- "चार्वाक कहते हैं कि यह देह नष्ट हो जाएगी इसलिए जब तक जियो सुख से जियो; सुख भोगने के लिए स्वस्थ तन का होना अति आवश्यक है। अतः सदैव शारीरिक रूप से पुष्ट रहो। इस तथ्य को बल देते हुये वे कहते हैं कि स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक भोजन भी आवश्यक है। इसलिए, पौष्टिक भोजन के लिए यदि ऋण भी लेना पड़े तो हिचकिचाओ नहीं।" अंतिम वाक्यांश "ऋणंकृत्वाघृतंपिबेत्" या 'उधार लेकर घी पियो' काव्यगत अतिशयोक्ति है। प्रत्येक सूक्ति के अनुपालन में अनुपालन विवेक बरतना आवश्यक है। कहानी सुना कर मामी ने मेरे जाने हेतु 'पथानंसुपथा' का स्वस्तिवाचन किया।

मैं प्रणाम कर चल पडा।

रास्ते में इस वार्तालाप पर मनन करते हुये बड़े हो चुके बेटों को समझाते हुये कहा- "मामी का इस उम्र में भी ज्ञान कम नहीं हुआ।" इस पर बेटों ने जिज्ञासा की- "पर आपकी मामी तो इस डॉक्टरीन को फॉलो तो नहीं करतीं?"

इसका मेरे पास कोई उत्तर नहीं था। इस जिज्ञासा का उत्तर प्राप्त करने में मुझे एक दशक लग गया।

चार्वाक दर्शन की चर्चा फिर कभी...

•

रामत्व

– **मुक्ता द्विवेदी**

राम नाम की माला को जप
बहुमूल्य यह मोती चार मिले।
नीति कुशलता मर्यादा सत्य-प्रेम
भगवत पुरुषत्व के आधार मिले।

रघुकुल नरेश की मृदुल सरलता,
उनके असाधारण सब काज मिले।

वचन की लाज पिता की रखने, सारे सुख परित्याग किये,
पितृ प्रेम की शोभा देखी, भ्रातृ प्रेम का सार मिले।

प्रणय सिया का हृदय में लेकर, लंका को ललकार दिए,
शत्रु अगर राम से हों, तो क्यों न रावण को निर्वान मिले।

घनघोर जटिल हो काल निरन्तर
जब लगे कठिन धर्म-अधर्म में अन्तर।
निर्मलता पर जो अडिग रहे,
सज्जनता का पथिक रहे,
राम को समिरे सांसों से, मानवता प्रधान प्रमुख रहे।

रामत्व की होगी तब सदा विजय,
जब राम नाम की महिमा को मानव जीवन में आकार मिले।।

•

Phone: 0522-4653145

Mob.: 8009161843
Email: hotelgangagreens@gmail.com

होटल गंगा ग्रीन्स एन्ड रेस्टोरेन्ट (प्योज वेज़)

3, ब्लन्ट स्क्वायर, निकट दुर्गापुरी मेट्रो स्टेशन, चारबाग-मवैय्या रोड, लखनऊ

हमारे नवनिर्मित होटल भवन में ठहरने के लिए पूर्णतया वातानुकूलित लग्ज़री कमरे, 500 व्यक्तियों के लिए सुसज्जित पूर्णतया वातानुकूलित बैंक्वेट हॉल, स्वादिष्ट मिठाइयाँ, नमकीन एवं रुचिकर शुद्ध शाकाहारी भोजन के लिए पधारें।

ब्राह्मण बंधुओं के लिए विशेष छूट उपलब्ध

अथातो पादुका जिज्ञासा

फेसबुक से साभार, योगकर्ता
– डा श्रीकांत अग्निहोत्री

रोमन सम्राट कॉन्स्टेंटियस को उसी की सभा में, लगभग ढाई हजार साल पहले एक विद्रोही ने पहला जूता मारा था। केवल भारत में ही नहीं, दुनिया भर में जूता निम्नतम-अपमान का प्रतीक रहा है। जूता चोटिल कम करता है, अपमानित अधिक। जूता फेंकने वाला 'केवल हिंसक' नहीं होता। केवल हिंसक होता तो पत्थर फेंकता। पत्थर, चोटिल अधिक करता है, आहत कम।

जूता, एक 'असहाय-आक्रोश' की अभिव्यक्ति है। एक कुचला हुआ प्रतिरोध, जो किसी पर कुछ फेंकने में निहित, न्यूनतम-हिंसा से खुद को बचा नहीं सकता। जैसे किसी के मुंह पर थूकने में हमला निहित है लेकिन थूक का लक्ष्य देह को घायल करना नहीं। ये अंतरात्मा को घायल करने का प्रयास है। जूता सदियों से अपमान का शक्तिशाली स्वर रहा है। अशक्त-क्रोध ने.....कई बार जूते को अभिव्यक्ति बनाया है।

संस्कृत कवि भास के 2 हजार साल पुराने नाटक 'प्रतिज्ञायौगंधरायण' में मंत्री यौगंधरायण, सेवक को सलाह देता है, "नृपं प्रति पादत्राणेन ताडयेत्" अर्थात 'राजा की तरफ जूता फेंक कर मारना' जूता दैहिक रूप से राजा का क्या बिगाड़ेगा? जूते का लक्ष्य देह होती ही नहीं। भारतीय लोकोक्तियों की दुनिया तो एक चलता-फिरता 'जूताखाना' है।

किसी को अपमानित करने के लिए जितना वैविध्य जूते में है, उतना अन्य किसी शब्द में नहीं। जैसे किसी को 'जूते की नोक पर रखना' और कोई नोक इतना आहत नहीं करेगी जितना जूते की नोक। 'सौ-सौ जूते खाय, तमाशा घुसकर देखेंगे' ये लोकोक्ति उन बेशर्मों का सम्मान है, जो अपमानप्रूफ हो चुके। 'जूते चाटना' कोई कह दे तुम उसकी घडी, अंगूठी, कड़ा, पगड़ी चाटते हो तो चल जायेगा लेकिन 'जूता चाटना' दो ही शब्द काफी हैं ये बताने के लिए कि लक्ष्य कहाँ है।

जूतों को छोड़कर बाकी अधिकांश मालाएं केवल सम्मानित करती हैं। अकेली जूतों की माला है जो 'अतिसम्मानित' करने के लिए पहनाई जाती है। सूखा जूता तो फिर भी ठीक था। रचनात्मक शिल्पियों ने अधिकतम उपार्जन के लिए 'भिगोकर जूते मारना' भी आविष्कृत किया।

कुछ कहते हैं दुष्ट से 'जूता हाथ में लेकर ही बात करनी' चाहिए। बड़े-बूढ़े कहते हैं 'भाग सोया हो तो नए जूते भी काटते हैं।' जूता महात्म्य जहाँ तक बखाना जाये, कम है। पहिये और आग के बाद मानव सभ्यता की तीसरी बड़ी खोज जूता ही है। इस जगत में जितने भी युगल हैं, उनमे सबसे शाश्वत जोड़ी जूतों की ही है। एक के बिना दूसरा हवा में तो चलता है, जमीन पर नहीं। आस्था और विनम्रता का स्तर ऐसा कि मंदिर की सीढ़ियों पर ही जीवन काट देता है।

आजादी की लड़ाई में भी जूते ने अपना योगदान दिया। लाहौर और बनारस की विरोध-सभाओं में जूते दिखाकर नारे लगाए जाते थे 'शासक के पाँव का जूता नहीं बनेंगे।'

फारसी में एक शब्द है पैजार। जिसका मतलब भी जूता ही है लेकिन यदि ये किसी तरह 'जूतम' से मिल जाए तो फिर जो 'जूतम-पैजार' होगी, वो अविस्मरणीय होगी। कई बार जब तर्क हार जाता है, जूता वाद जीत लेता है।

इसलिए जब 'शब्द' नहीं चलते तब 'जूते' चलते हैं। 'किसी व्यक्ति को आप उसके चेहरे से अधिक जूतों से जान सकते हैं।' जूता केवल व्यक्ति को गिरने से नहीं बचाता... चरित्र गिरने से भी बचाता है। इसलिए जूता चरित्र से कम फिसलता है।

पुराने कई जमीदार मूंछों की नोक से भी पैनी जूतों की नोक रखते थे।

जूते पर लिखने के लिए कितने भी जूते घिसो कम है। इसलिए तमाम विश्व में आज तक फेंके गए समस्त जूतों की 'कड़ी निंदा' करते हुए.....

जूताख्यान को यहीं विराम देकर, अपने जूते खोजता हूँ ताकि घूमने जा सकूँ...।

•

नारी एक मर्यादा

- रोली

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

ये बात सच है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है, देवता भी वहीं निवास करते हैं क्योंकि नारी ही सम्पूर्ण जगत की जननी है।

आज के युग में पश्चिमी देशों का प्रभाव सबसे ज्यादा नारी पर ही पड़ा है। नारी में जब से पुरुष से आगे निकलने की होड़ पैदा हो गई, तब से उसने अपनी सारी मर्यादाओं को पार कर दिया। मेरा मतलब, आपने देखा होगा, पुरुषों में आज भी उतना बदलाव नहीं आया जितना नारियों में आया है। चाहे वस्त्रों की बात हो या पढ़ाई की, नौकरी की हो या आधुनिकता की। आज कोई भी लड़की घर में रहना पसंद नहीं करती, हर किसी को नौकरी करनी होती है।

दुःख की बात कुछ ऐसी थी कि जब सभी जिम्मेदारियों से फुर्सत पाए तो चच्ची ने बीमारी के कारण उनका साथ छोड़ दिया। इस कारण चच्चा अब बिल्कुल शांत रहने लगे थे। दो बहुओं का ऐसा तुकान मिला कि वह अब बीच वाली बहू-बेटे के साथ रहने लगे। पोता-पोती भी उनकी बहुत सेवा करते जिससे उनका मन अब खुश रहने लगा था। अब चच्ची का गम भी कुछ कम महसूस करने लगे थे।

स्वभाव से हँसमुख, स्वस्थ शरीर, गर्वीली आवाज, समय की नज़ाकत को जानने वाले अब्दुल चच्चा ने अपने को कुछ इस तरह ढाल लिया था कि सबकी रज़ा में उनकी रज़ा और रहते हुए भी न रहने के बराबर अपनी उपस्थिति दर्ज कराते थे।

लाए। जिसमें योग्यता के अनुसार नौकरी करने की प्रेरणा दें। साथ ही घर-परिवार के प्रति क्या कर्तव्य हैं, इस पर जोर दें। धर्म एवं संस्कृति से जुड़कर रहने के क्या फायदे हैं, इस पर जोर दें क्योंकि नारी एक जननी के साथ देश, समाज, परिवार, कुल की मर्यादा है। उस पर एक नहीं, दो कुलों का भार होता है। इसीलिए ईश्वर ने पुरुषों से ज्यादा नारी को सहनशील बनाया है।

•

फलित ज्योतिष- कुण्डली विधान

- **सुरभि दीक्षित त्रिवेदी,** गाज़ियाबाद

आज के आधुनिक युग में लोगों का झुकाव ज्योतिष की तरफ बढ़ते देखा जा रहा है। आज पश्चिमी देशों में भी ज्योतिष की तरफ रुझान बढ़ रहा है। इसका कारण यह है कि ज्योतिष एक विज्ञान है। यह एक ऐसी विद्या है जिसमें हम मनुष्य तथा पृथ्वी पर ग्रहों और तारों के शुभ और अशुभ प्रभावों का अध्ययन करते हैं। आकाश में सूर्य के चारों तरफ ग्रह भ्रमण करते हैं। भ्रमण का एक चक्र 360^0 का होता है। यह 360^0 का राशिचक्र 12 राशियों और 27 नक्षत्रों में बंटा होता है। ये राशियां और नक्षत्र स्थिर होते हैं और ग्रहों का भ्रमण इन्हीं राशियों और नक्षत्रों से गुजरता है। 360^0 को बारह राशियों से विभाजित करने पर एक राशि 30^0 की होती है और 27 नक्षत्र में 13.33^0 का एक नक्षत्र होता है। नक्षत्र के भी चार पद होते हैं। ग्रहों का इन राशियों में अलग-अलग समय का गोचर होता है। सूर्य एक राशि में 1 महीने के लिए होता है। चन्द्रमा तेज चाल से चलता है, अतः यह एक राशि में 2.5 दिन के लिए रहता है। बुध, मंगल, शुक्र तकरीबन 30 दिन, गुरू एक साल, शनि 2.5 साल और राहु-केतु 1.5 साल एक राशि में गोचर करते हैं।

जब एक बालक जन्म लेता है तो ग्रहों और नक्षत्रों की आकाशीय स्थिति कए कैमरे का काम करती है। ग्रहों की यह स्थिति उसके पूरे जीवन को प्रभावित करती है। धरती अपनी धुरी पर घूमती हुई 24 घंटे में एक चक्कर पूर्ण करती है। पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की तरफ घूमती है। पूर्व में हर दो घण्टे में एक राशि उदय होती है। जिस समय बालक का जन्म होता है और उस वक्त जो भी राशि पूर्व में उदय होती है, वो बालक का लग्न बन जाती है। लग्न जानने के लिए जन्म का सही समय, तारीख और स्थान का महत्व है। एक मिनट का फर्क भी कुण्डली में राशि की डिग्री बदल सकती है और इसका असर दूसरी वर्ग कुण्डली जैसे D7, D9 पर असर डाल सकती है। वर्ग कुण्डली से कई तरह की भविष्यवाणियाँ की जा सकती हैं। वर्ग का अर्थ है समूह या विभाजन। जन्म कुण्डल के प्रत्येक भाव एक निश्चित नियम से कई छोटे-छोटे भागों में बाँटा जाता है। कुछ महत्वपूर्ण वर्ग कुण्डली इस प्रकार हैं-

D-1 जन्म कुण्डली : यह लग्न कुण्डली होती है। यह जन्म के समय ग्रहों की स्थिति दर्शाती है। अन्य वर्ग कुण्डली में ग्रह किसी भी भाव या राशि में जाएँ, लेकिन सभी वर्ग कुण्डलियों के लिए गणना जन्म कुण्डली में ही की जाती है।

D-2 होरा कुण्डली : इस कुण्डली में जातक के पास धन-सम्पत्ति का आकलन किया जाता है।

D-3 द्रेष्काण कुण्डली : इस कुण्डली में जातक के भाई-बहनों का अध्ययन किया जाता है।

D-4 चतुर्थांश कुण्डली : यह चल-अचल सम्पत्ति तथा भाग्य का अनुमान लगाने में मदद करती है।

D-7 सप्तमांश कुण्डली : इस कुण्डली से संतान का अध्ययन किया जाता है।

D-9 नवांश कुण्डली : यह कुण्डली काफी महत्वपूर्ण है। इससे वैवाहिक जीवन का आकलन और जीवन के सभी क्षेत्रों का अध्ययन किया जाता है। नवांश कुण्डली से स्थिति का सटीक आकलन किया जाता है। उदाहरणार्थ, जन्म कुण्डली में कोई ग्रह खराब स्थिति में हो, परन्तु नवांश कुण्डली में उसकी स्थिति अच्छी हो तो उस ग्रह के बुरे प्रभावों का फल नहीं रहता।

D-10 दशमांश कुण्डली : इस कुण्डलीी से व्यवसाय में उन्नति, प्रतिष्ठा, आजीविका का आकलन किया जाता है।

किसी कुण्डली में लग्न काफी महत्वपूर्ण होता है। लग्न से जातक की शारीरिक संरचना, स्वभाव, स्वास्थ्य और आत्म-विश्वास का आकलन किया जाता है। लग्न की राशि जातक के जीवन का उद्देश्य दर्शाती है। लग्न में बैठे ग्रह भी जातक के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाते हैं। एक मजबूत लग्न यह दर्शाता है कि जातक शारीरिक तौर पर मजबूत है, उसमें आत्म-विश्वास है और वो जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है।

इसके विपरीत एक कमजोर लग्न जीवन में आने वाली कठिनाइयों और जातक का संघर्ष दर्शाता है। जातक शारीरिक रूप से कमजोर, अस्वस्थ और आत्म-विश्वास में कमी होती है। किसी कुण्डली में लग्न कमजोर है तो उसको मजबूत करने के उपाय अवश्य करने चाहिए।

लग्न के बाद जातक का स्वभाव चन्द्र राशि से भी पता चलता है। चन्द्रमा मन है। चन्द्र की स्थिति जातक के मानसिक और भावनात्मक व्यक्तित्व को दर्शाती है। दैनिक और साप्ताहिक राशिफल अक्सर चन्द्र राशि पर ही आधारित होते हैं।

अब बात करते हैं बारह राशियों की। बारह राशि, उनके ग्रह और उनके देव कुछ इस प्रकार हैं-

	राशि	ग्रह	देव
1.	मेष	मंगल	हनुमान जी, रूद्र, नृसिंह
2.	वृष	शुक्र	लक्ष्मी
3.	मिथुन	बुध	गणेश, दुर्गा
4.	कर्क	चन्द्रमा	शिव, कृष्ण
5.	सिंह	सूर्य	शिव, राम
6.	कन्या	बुध	विष्णु, शिव, पार्वती, दुर्गा
7.	तुला	शुक्र	लक्ष्मी, पार्वती
8.	वृश्चिक	मंगल	हनुमान
9.	धनु	बृहस्पति	विष्णु
10.	मकर	शनि	शिव, शनिदेव
11.	कुम्भ	शनि	शिव, शनिदेव
12.	मीन	बृहस्पति	विष्णु, शिव

लग्न में पड़ने वाली राशि और उसके ग्रह से जुड़े हुए देव की पूजा और मंत्रोच्चारण से कमजोर लग्न को मजबूत किया जा सकता है। अब हम कुण्डली की संरचना और उसके भावों को निम्नांकित चित्र से समझते हैं-

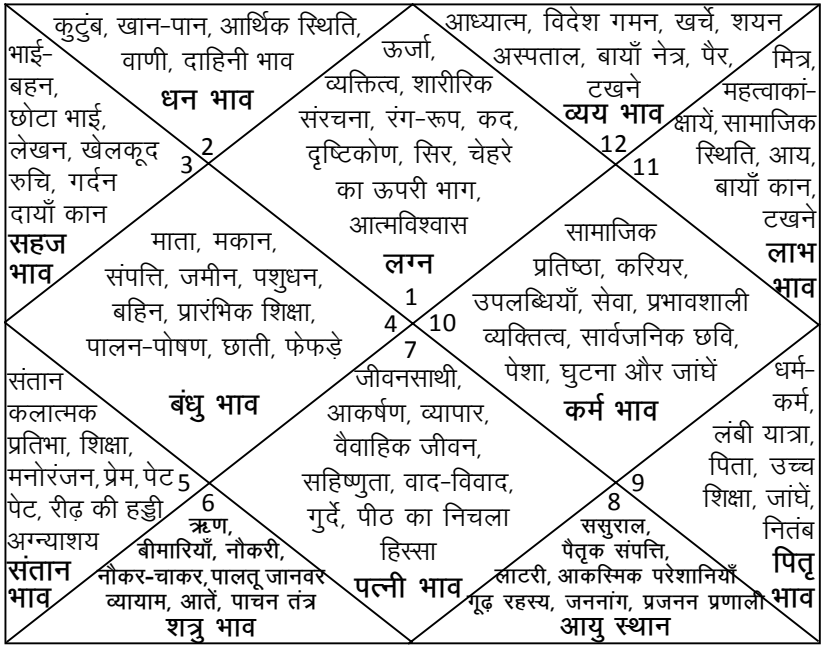

कुण्डली में पहला घर लग्न होता है जो जातक स्वयं है। दूसरे घर से जातक की आर्थिक स्थिति और कुटुंब के बारे में पता चलता है। तीसरा घर पराक्रम का है। चौथे घर से माता और वाहन सुख देखा जाता है। पंचम संतान का स्थान है। छठा कर रोग और ऋण है। सातवाँ जीवन साथी है। आठवाँ ससुराल, आकस्मिक धनलाभ और रिसर्च है। नवाँ घर धर्म और पिता की स्थिति दर्शाता है। दसवाँ घर कर्म है। ग्यारहवाँ घर लाभ, आय और मित्र है। बारहवाँ घर व्यय, खर्च, अस्पताल और विदेश में रहना दिखाता है।

ऊपर दिया गया चित्र भाव पर आधारित है। जन्म के समय और स्थान के अनुसार इन भावों में राशियाँ बदलती हैं, किन्तु भाव मूल स्वभाव नहीं बदलता। उदाहरणार्थ- यदि लग्न में शनि की राशि मकर या कुम्भ हो तो जातक गम्भीर स्वभाव का और कर्मशील होता है, वहीं अगर शुक्र की राशि वृष आ जाए तो जातक सौंदर्यप्रेमी और विनोदी होगा।

ज्योतिष शास्त्र में 9 ग्रहों को उनके तत्वों, नैसर्गिक स्वभाव और गुणों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। जैसे सूर्य राजा है, चन्द्रमा मन, मंगल सेनापति, बुध युवराज, बृहस्पति गुरू, शुक्र विलासिता और शनि न्यायाधीश है। इन ग्रहों के कारक इस प्रकार हैं:

1. सूर्य : आत्मा, पिता, शासक, ऊर्जा है।
2. चन्द्रमा : माता, मन, कल्पना, शीतलता, बुद्धि है।
3. मंगल : सेनापति, साहस, भूमि, क्रोध, अग्नि है।
4. बुध : तर्कशक्ति, वाणी, विनोद, संचार, व्यापार है।
5. बृहस्पति : धर्म, ज्ञान, अध्यात्म, विवाह और मंगलकार्य है।
6. शुक्र : ऐश्वर्य, वाहन, प्रेम, विलासिता और भौतिक सुख है।
7. शनि : न्याय, दण्ड, सेवक, धैर्य, उदासी, धीमी गति है।
8. राहू : कूटनीति, चतुरता, दूर की सोच, भ्रम, कम्प्यूटर और तकनीकी है।
9. केतु : मोक्ष, तंत्र-मंत्र, आध्यात्म, वैराग्य, आकस्मिता है।

ग्रहों की प्रकृति : बृहस्पति, चन्द्रमा, बुध और शुक्र शुभ ग्रह हैं। जबकि सूर्य, मंगल, शनि, राहू-केतु क्रूर ग्रह हैं।

हालांकि कोई भी ग्रह शुभ या अशुभ नहीं होता। यह एक कुण्डली निर्धारित करती है कि कौन सा शुभ है और कौन ग्रह अशुभ, बाकी कर्म से बढ़कर कुछ नहीं है। नेक कार्य और मेहनत ग्रहों के बुरे फूल यूँ भी कम कर देती है।

●

Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

Form for lifemembership of Kanyakubj Sabha &/ or Kanyakubj Vaani magazine

1. **Name of Member:** .....
2. **Age:** .....
3. **Gotra:** .....
4. **Father's/Husband's Name :**.....
5. **Address :** .....

   .....
6. **landline/Mobile No.:** .....
7. **Email :** .....
8. **Name of spouse / Father'sName :**.....
9. **Education :** .....
10. **Occupation (Post/Designation) :**.....

Unmarried Children **Name** **Age** **Education** **Job**

a) .....

b) .....

c) .....

11. **Any other information :**

Date : **(Signature)**

Reciept of Membership

Combined Membership of Kanyakubj Sabha & Kanyakubj Vaani is Rs. 3000/-

Received with thanks sum of Rs. 3000/- from .....

Cheque in favor of Bank of Baroda, Hazratganj Branch, Lucknow A/c No. 77140100006054 IFSC Code- BARB0VJHAZR.

Cheques to be sent Shri Akhilesh Bajpeyi, C-1/367, Sector H, L.D.A. Colony, Kanpur Road, Lucknow-226012, Mob.: 9415023874

Date **Signature with Full Name**

साइकिल पाकर प्रसन्न छात्रायें

काव्यपाठ डी.सी. पाण्डे

विष्णु पांडेजी को कान्यकुब्ज रत्न सम्मान

कलाकारों को सम्मान

सभा में वरिष्ठतम सदस्य का स्वागत

रात्रिभोज

40 Pioneering since YEARS
मेघदूत
सत्रीठा व शिकाकाई
आयुर्वेदिक शैम्पू
यह बिना किसी केमिकल के बालों को गहराई से साफ करने मे सहायक है साथ ही बालों मे प्राकृतिक नमी को भी बनाए रखने मे मदद करता है।
मेघदूत
सत्रीठा
AYURVEDIC
with natural extracts of
AMLA, REETHA & BHRINGRAJ
FOR HAIR FALL, DANDRUFF & SCALP ACNE
Net Vol. 500ml
MEGHDOOT
SHIKAKAI SAT
Shikakai & Amla
PARABEN FREE
SLS FREE
• बालों मे रूसी-खुश्की
• बालों का गिरना व टूटना
• असमय सफेद हो रहे बालों मे विशेष गुणकारी औषधि।
आयुर्वेदिक औषधि
समस्त गांधी आश्रम, खादी भंडार, व आयुर्वेदिक स्टोरों पर उपलब्ध है।
AVAILABLE ON:
1mg amazon
Call Us : +91-9235623142, 7617003671
www.meghdootherbal.com